भारतीय ज्ञानपरम्परा आधारित

संस्कृति बोधमाला २

प्रकाशक : विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
हमारा लक्ष्य
इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा-पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

ॐ

मंगलाचरण

सरयू का तट सुन्दर मनहर, भरत शत्रुघ्न लक्ष्मण रघुवर।
खेलें धनुष बाण ले हाथ, आओ उन्हें झुकाएँ माथ।।

राष्ट्र गीत - वन्दे मातरम्

प्रस्तुत राष्ट्रगीत भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी) द्वारा रचित 'आनंदमठ' पुस्तक से उद्धृत है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय यही गीत क्रांतिकारियों का प्रेरणा मंत्र रहा है।

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्य श्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम् ॥१॥
शुभ्र-ज्योत्स्नां-पुलकित-यामिनीम्,
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्,
सुहासिनीं, सुमधुर-भाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम्। वन्दे मातरम् ॥२॥
कोटि-कोटि-कंठ कल-कल-निनाद-कराले,
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खर-करवाले,
अबला केनो माँ एतो बले,
बहुबल-धारिणीं, नमामि तारिणीम्,
रिपुदल-वारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ॥३॥
तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम् ॥४॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण-धारिणीम्,
कमला कमल-दल-विहारिणीम्,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्,
सुजलां सुफलां, मातरम्। वन्दे मातरम् ॥५॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,
धरणीं भरिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ॥६॥

भारत माता की जय।

प्रकाशकीय

परमोच्च सत्य का सन्धान, आख्यान और व्यवहार संस्कृति है। आसेतुहिमाचल, इस भूमि पर अपनी सारस्वत साधना से इस सत्य का साक्षात् दर्शन कर हमारे पूर्वज मनीषियों ने ऋषि पद प्राप्त किया। वेद एवं उपनिषद् आदि वाङ्मय के रूप में उन्होंने इसकी अभिव्यक्ति की। इस पृथ्वीतल एवं समस्त ब्रह्माण्ड की प्राकृतिक शक्तियों की देवरूप में मनोरम स्तुति तथा जीवन के गूढ़ रहस्यों का, विविध आख्यान-उपाख्यानों के माध्यम से, तात्त्विक कथन आदि ने इसके स्वरूप को गढ़ा। इनके आधार पर जिन जीवनमूल्यों (दर्शन), जीवन व्यवहार (धर्म) का विकास हुआ उसे भारतीय संस्कृति के नाम से अभिहित किया गया। 'सत्य संकल्प प्रभु' राम, गीता के आख्याता श्रीकृष्ण एवं कण-कण में रमे शिवशंकर 'संस्कृति पुरुष' बने।

सत्य शाश्वत है, कालजयी है, इसलिए उसका प्रवाह चिरन्तन होता है। सत्य को वहन करने वाली संस्कृति की गति कभी मृदु, मंद, मंथर उर्मियों से युक्त होती है तो आवश्यकता होने पर इसमें उत्ताल तरंगें भी उठती हैं। भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध ने इसे विविधावर्णी बनाया। श्रीमद् शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य प्रभृत्ति तत्त्ववेत्ताओं के दार्शनिक सूत्रों के साथ उस तत्त्व के रसरूप (रसो वै सः) के प्रति भक्तिपरक स्तोत्रों ने इसमें माधुर्य का संयोग किया। पुराण साहित्य तो भक्ति का अगाध समुद्र ही है। ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् एवं श्रीमद्भगवद्गीता- इस प्रस्थानत्रयी में श्रीमद्भागवत जुड़कर प्रस्थान चतुष्टय हुआ, जिसने मस्तिक और हृदय-तत्त्वचिन्तन और भक्ति की समन्वित धारा को गति प्रदान की। पूरे इतिहास फलक पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि लम्बे संघर्षकाल में- प्रारंभ से अन्त तक- इन्हीं ग्रन्थों में ग्रथित तत्त्वदर्शन का युगीन, समकालीन व्याख्यान हमें प्रेरणा देता रहा है।

देवताओं के लिए भी स्पृहणीय भारतभूमि, राष्ट्र का भारतमाता के रूप में चिरंतन दर्शन एक ओर, तो दूसरी ओर 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' कहकर सम्पूर्ण जगती के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव, भारतीय संस्कृति का मूल है। 'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' (महाभारत), 'सबार ऊपर मानुष सत्य, ता ऊपर किछु नाहीं (चण्डीदास) कहकर मनुष्य मात्र को इस संस्कृति ने अपने केन्द्र में रखा तो जीवमात्र और उससे भी आगे बढ़कर चेतन के साथ जड़ को भी जोड़कर यह संस्कृति अनन्त विस्तार पाती है। छोटे से छोटा (अणोरणीयान्) और बड़े से बड़ा (महतो महीयान्), सब कुछ को यह अपनी परिधि में समाहित कर लेती है। आध्यात्मिकता, सांसारिकता, शाश्वत धर्म, सामयिक कर्त्तव्य, सुरज्ञान, कर्म, भक्ति का समन्वय, पुरुषार्थ चतुष्टय, व्यवहार के स्तर पर आन्तरिक शुचिता और बाह्यशुद्धि आदि विचार इसकी श्रेष्ठता है। इस सबका आख्यान करने वाले रामायण, महाभारत हमारे 'संस्कृति ग्रन्थ' हैं।

संस्कृति का यह प्रवाह अबाध व निरन्तर बना रहे, इसकी आवश्यकता आज बड़ी तीव्रता से अनुभव में आती है। यह नई पीढ़ी तक पहुँचे, नई पीढ़ी को इसका सम्यक, सुष्ठु और सर्वाङ्ग बोध हो, इस उद्देश्य से विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान इस संस्कृति बोधमाला का प्रकाशन कर रहा है। भावीपीढ़ी 'संस्कृति दूत' बनकर मानवता की सेवा कर सकें, दिशा दे सकें तो हम कृतकार्य होंगे।

संस्कृति बोधमाला को तैयार करने के लिए विद्या भारती के अनेक कार्यकर्ताओं ने सब प्रकार का अनवरत परिश्रम किया है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसमें उपयोग किए गए चित्रों के रचनाकार निश्चय ही हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। जिन महानुभावों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में इसमें सहयोग मिला, उनका विनम्र आभार...

– प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	**हमारी भारतमाता** चारधाम, सप्तपुरियाँ, सांस्कृतिक पर्व-त्योहार, हमारे पवित्र पर्वत, आज के अन्य देशों में हमारे पवित्र स्थान,	५
२.	**हमारा भारत राष्ट्र** हमारे राष्ट्र नायक, हमारे एकता बोधक तत्त्व, संतवाणी, प्रातःस्मरणम्।	११
३.	**हमारी भारतीय संस्कृति** सत्कर्म, संस्कारों की पावन परम्परा, हमारी मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार।	१५
४.	**हमारी परिवार व्यवस्था** आहार विहार, स्वदेशी और स्वावलम्बी, सद्गुण विकास, गीत, भारतीय भाषाएँ।	१९
५.	**हमारी ज्ञानपरम्परा** श्रीरामचरितमानस प्रसंग, श्रीमद्भगवद्गीता, योग का महत्त्व।	२५
६.	**हमारी वैज्ञानिक परम्परा** भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर जगदीशचन्द्र बसु, कुछ महान वैज्ञानिक, भारतीय वैज्ञानिक, वैज्ञानिक प्रेरक प्रसंग, पवित्र एवं औषधीय वृक्ष, भारतीय कालगणना, संगीत की भारतीय परम्परा, लोकनृत्य।	३०
७.	**हमारा गौरवशाली अतीत** हमारे दिग्विजयी वीर, हमारा राष्ट्रगीत वन्देमातरम्, प्रेरक बालवीर।	३७

---

१. हमारी भारतमाता

Hkkjrekrk txfo[;krk] r> ijge cfygkjh ekA
ge rj fç; i=g tuuh] r ge lcdh l;kjh ekAA

भारत वह राष्ट्र है जिसमें हम जन्मे, पले-बढ़े, जिसका अन्न-जल ग्रहण किया। यह हमारी भारतमाता है। हमारे लिए इसका कण-कण पवित्र है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न तीर्थ, मन्दिर, नदियाँ, पर्वत, सप्तपुरियाँ, चारों धाम, चारों मठ इत्यादि पावन स्थल इसी धरा पर स्थित हैं। आइए, भारत के ऐसे कुछ पावन स्थलों का परिचय प्राप्त करें -

चार धाम

भारतीय राष्ट्रीय एकता के प्रतीक चार धाम हैं -

उत्तर दिशा में	–	बदरीनाथ धाम
पूर्व दिशा में	–	जगन्नाथपुरी धाम
पश्चिम दिशा में	–	द्वारका धाम
दक्षिण दिशा में	–	रामेश्वरम् धाम

बदरी जगन द्वारका रामेश जिसके धाम।
भरत भू महान है महान है महान।

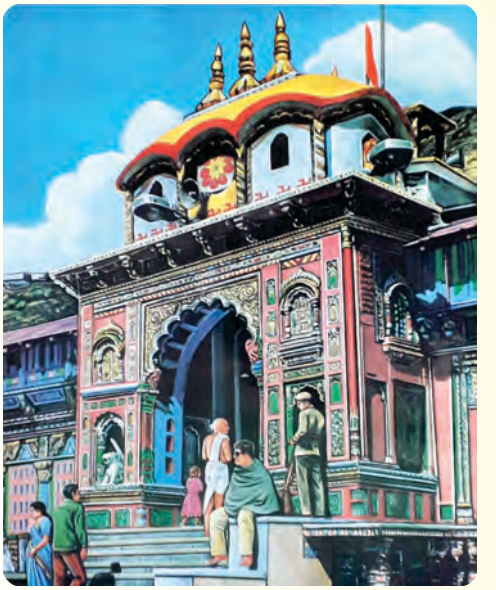

बदरीनाथ धाम (उत्तराखण्ड)

आइये, इन धामों के बारे में कुछ और जानें -

प्रश्न बदरीनाथ धाम किस प्रदेश में है? **(उत्तराखण्ड)**

प्रश्न बदरीनाथ धाम किस पर्वत पर है? **(हिमालय)**

प्रश्न जगन्नाथ धाम का विश्व प्रसिद्ध उत्सव कौनसा है? **(रथयात्रा)**

प्रश्न जगन्नाथ रथयात्रा किस तिथि को प्रारम्भ होती है? **(आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि)**

प्रश्न भारत की पश्चिम दिशा में कौनसा धाम है? **(द्वारका धाम)**

प्रश्न द्वारका धाम में भगवान श्रीकृष्ण किस नाम से प्रसिद्ध हैं? **(द्वारकाधीश)**

प्रश्न रामेश्वरम् धाम में शिवलिंग की स्थापना किसने की थी? **(भगवान श्रीराम ने)**

प्रश्न रामेश्वरम् धाम किस प्रदेश में है? **(तमिलनाडु)**

प्रश्न चारों धाम में वह कौनसा धाम है जहाँ भगवान शिव की पूजा होती है? **(रामेश्वरम्)**

प्रश्न चारों धाम में कौनसे धाम समुद्र तट पर हैं? **(द्वारका, रामेश्वरम्, जगन्नाथपुरी)**

सप्तपुरियाँ

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चि अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:॥

१. **अयोध्या** – यह भगवान् श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि है और उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के तट पर स्थित है।

२. **मथुरा** – यह भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मस्थली है तथा उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के किनारे स्थित है।

३. **मायापुरी (हरिद्वार)** – गंगा नदी के तट पर, उत्तराखण्ड प्रदेश में प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, जहाँ से गंगा की मैदानी यात्रा प्रारम्भ होती है। 'हर की पौड़ी' यहाँ का पवित्र घाट है। यह कुम्भ मेले का स्थान भी है।

अयोध्यापुरी

४. **काशी (वाराणसी)** – यहाँ काशी विश्वनाथ (शिव जी) का सुप्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग है। यह उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के किनारे पर स्थित है।

५. **काञ्चिपुरम्** – यहाँ काञ्चि कामकोटि पीठ प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ आदि शंकराचार्य का मठ है। यह तमिलनाडु प्रदेश में स्थित है।

६. **अवन्तिका (उज्जैन)** – यहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक, महाकाल ज्योतिर्लिंग हैं। यह स्थान मध्य प्रदेश में स्थित है। यहाँ कुम्भ मेला भी भरता है।

७. **द्वारावती (द्वारकापुरी)** – गुजरात में समुद्र तट पर स्थित है। यह चारों धामों में से एक धाम है।

आओ, और अधिक जानें :-

प्रश्न अयोध्या के प्राचीन नाम क्या हैं? **(साकेत, अवधपुरी)**

प्रश्न मथुरा के प्राचीन नाम क्या हैं? **(मधुपुरी, मधुरा)**

प्रश्न हरिद्वार में दक्ष प्रजापति ने किस स्थान पर यज्ञ किया था? **(कनखल)**

प्रश्न अयोध्या का मुख्य हनुमान मन्दिर किस नाम से प्रसिद्ध है? **(हनुमानगढ़ी)**

प्रश्न वाराणसी में किन दो नदियों का संगम है? **(वरुणा और असी)**

प्रश्न कांचीपुरी के कौन से दो भाग हैं? **(शिवकांची, विष्णु कांची)**

प्रश्न श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा की शिक्षास्थली कौन सी थी? **(उज्जैन में सांदीपनि आश्रम)**

प्रश्न अवन्तिका किस नदी के तट पर बसी है? **(शिप्रा नदी)**

प्रश्न द्वारका पुरी भारत की किस दिशा में है? **(पश्चिम)**

कुम्भ-स्थल

क्र.	नगर	प्रदेश	स्थल
१.	हरिद्वार	उत्तराखण्ड	गंगा नदी के तट पर
२.	उज्जैन (अवन्तिका)	मध्य प्रदेश	शिप्रा नदी के तट पर
३.	नासिक	महाराष्ट्र	गोदावरी नदी के तट पर
४.	प्रयागराज	उत्तर प्रदेश	गंगा, यमुना, सरस्वती (त्रिवेणी) संगम पर

कुम्भ पर्व - एक दृश्य

सांस्कृतिक पर्व-त्योहार

हमारे देश में पूरे वर्ष ही अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। कई त्योहार क्षेत्र विशेष तक सीमित है परन्तु अनेक त्योहार पूरे देश में मनाए जाते हैं। इन प्रमुख त्योहारों को मनाने की पद्धति अलग-अलग होती है लेकिन ये एक ही तिथि पर हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति की पहचान बने हुए हैं। ऐसे ही कुछ त्योहारों का परिचय हम यहां प्राप्त करेंगे।

(१) गुरुपूर्णिमा (आषाढ़ पूर्णिमा) - भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सबसे ऊँचा है। भगवान का दर्शन कराने वाले भी गुरु ही होते हैं। इसीलिए कहा है-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय॥

गुरुपरम्परा के प्रतीक
महर्षि वेदव्यास

गुरु की महिमा को समर्पित यह दिन महर्षि वेदव्यास की जयन्ती का दिन है। महर्षि वेदव्यास ने ही वेदों, पुराणों एवं महाभारत जैसे भारतीय संस्कृति के अमूल्य ग्रन्थों का सम्पादन और लेखन किया। समस्त गुरुओं में प्रधान माने जाने से उनका जन्मदिन गुरुपूर्णिमा के रूप में प्रसिद्ध है।

(२) विजयादशमी (आश्विन शुक्ल दशमी) - विजयादशमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनेक प्रकार से मनाया जाने वाला प्रमुख त्योहार है। इसी दिन भगवती दुर्गा द्वारा महिषासुर नामक राक्षस का तथा भगवान श्रीराम द्वारा रावण वध किया गया था। इसी दिन अपना अज्ञातवास पूर्ण होने पर राजा विराट की युद्ध में सहायता के लिए पाण्डवों ने शमी वृक्ष पर छुपाए अपने शस्त्र ग्रहण किए थे। इसलिए इस दिन शस्त्रपूजन, सीमोल्लंघन और रावण का पुतला जलाने की परम्परा है। इसी दिन डॉ॰ केशवराव बलिराम हेडगेवार ने १९२५ में नागपुर स्थित 'मोहिते के बाड़े' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी।

वर्ष प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) – इसी दिन सृष्टि का आरम्भ, भगवान श्रीराम का राज्यारोहण, विक्रमादित्य का राज्याभिषेक, विक्रमी संवत् का शुभारम्भ हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ॰ केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी इसी दिन हुआ था।

रामनवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) – इस दिन पवित्र अयोध्यापुरी में भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था।

पर्वसाक्षी भगवान सूर्य

- मकर-संक्रान्ति/पोंगल/बिहू — सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने पर
- वैशाखी (पंजाब) — मेष संक्रान्ति
- छठ पूजा (बिहार) — कार्तिक शुक्ल षष्ठी (सूर्य षष्ठी)
- गणेश उत्सव (महाराष्ट्र) — भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी
- गीता जयन्ती (हरियाणा) — मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी

हमारे देश के पर्व हमारी सांस्कृतिक परम्परा के प्रतीक हैं। क्या आप अपने इन पर्वों के सम्बन्ध में जानते हैं?

१. शस्त्रों की पूजा -------- के दिन होती है। **(विजयादशमी)**

२. ------ का दिन भारत में गुरुपूजन के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है? **(गुरुपूर्णिमा)**

३. रक्षाबन्धन का त्योहार भारतीय मास -------- की पूर्णिमा को मनाया जाता है। **(श्रावण)**

४. गुरु पूर्णिमा का उत्सव भारतीय मास -------- की पूर्णिमा को मनाया जाता है। **(आषाढ़)**

५. भारतीय नया वर्ष -------- से प्रारम्भ होता है। **(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)**

६. गणेश जी का जन्मोत्सव ------ को मनाया जाता है। **(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)**

७. लंका विजय के बाद श्रीराम के अयोध्या लौटने पर मानए जाने वाला उत्सव ---------- है। **(दीपावली)**

८. सौर मास के अनुसार मनाये जाने वाले त्योहार का नाम ---------- है। **(मकर संक्रान्ति)**

९. सरस्वती प्रकटोत्सव ------- को मनाया जाता है। **(बसन्त पंचमी)**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानिए -

प्रश्न विजयादशमी को डॉ॰ हेडगेवार जी ने किस संगठन की स्थापना की थी? **(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)**

प्रश्न विजयादशमी को किन राक्षसों का वध किया गया? **(१. महिषासुर, २. रावण)**

प्रश्न महिषासुर का वध किसने किया था? **(महिषासुरमर्दिनी माँ दुर्गा ने)**

प्रश्न गुरु पूर्णिमा किस ऋषि की जयन्ती है? **(श्री कृष्णद्वैपायन व्यास)**

प्रश्न श्रावण पूर्णिमा को किस भाषा का दिवस घोषित किया गया है? **(संस्कृत दिवस)**

हमारे पवित्र पर्वत

जिस प्रकार पवित्र नदियाँ राष्ट्र की एकात्मता का आधार हैं, ऐसे ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित पर्वत और शिखर सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। कुछ पर्वतों का परिचय हम जानने का प्रयास करेंगे–

१. **हिमालय पर्वत** – यह विश्व का सर्वोच्च पर्वत है जिसमें अनेक हिम से ढँकी चोटियाँ और विशाल घाटियाँ हैं। यहाँ पर देवी–देवताओं का वास है इसलिये महाकवि कालिदास ने इसको 'देवातात्मा' नाम से उल्लेखित किया है। सिन्धु, गंगा, सतलुज, गण्डक, ब्रह्मपुत्र आदि का यहाँ से उद्‌गम हुआ है। बदरीनाथ, केदारनाथ, कैलास, मानसरोवर, अमरनाथ एवं अनेक प्रसिद्ध देवी तीर्थस्थल हिमालय में है। यह अनेक ऋषि–महात्माओं की तप:स्थली रहा है।

२. **अरावली पर्वत** – दिल्ली के दक्षिणी सिरे से प्रारम्भ होकर हरियाणा, राजस्थान व गुजरात तक दक्षिण–पश्चिम दिशा में यह पर्वतमाला फैली हुई है। यह विश्व के प्राचीनतम पर्वतों में से एक है। स्कन्द पुराण व महाभारत में इसका वर्णन आया है। मेवाड़ को विदेशी आक्रान्ताओं से मुक्त कराने का महान व सफल अभियान इसी पर्वत शृंखला में फलीभूत हुआ।

३. **विन्ध्य पर्वत** – यह भारत के मध्यवर्ती भाग में गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार व उत्कल तक फैला है। विन्ध्याचल की औसत ऊँचाई ६०० मीटर है। मध्य भारत की प्रमुख चम्बल, बेतवा, केन, शिप्रा, बनास आदि नदियों का यह उद्‌गम स्थल है। नर्मदा एवं सोन नदी का उद्‌गम स्थल अमरकंटक, विन्ध्याचल व सतपुड़ा शृंखला को आपस में मिलाता है। दुर्गा सप्तशती, देवी भागवत तथा स्कन्द पुराण में इस पर्वत का विशेष उल्लेख है।

आज के अन्य देशों में हमारे पवित्र स्थान

१. **ननकाना साहिब** – सिक्ख धर्म के संस्थापक एवं प्रथम गुरु नानकदेव जी का जन्म १४६९ ई॰ में ननकाना साहिब में हुआ था। यह प्रसिद्ध तीर्थ वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के ननकाना जिले में है।

ननकाना साहिब (पाकिस्तान)

२. **तक्षशिला** – विश्व के प्राचीन शिक्षा केन्द्रों में से एक है। पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के रावलपिण्डी शहर से लगभग ३५ कि॰मी॰ दूर तक्षशिला के खण्डहर हैं। यहाँ धर्मराजिका स्तूप है जिसके चारों ओर छोटे-छोटे स्तूप और परिक्रमा पथ हैं। यहीं गौतमबुद्ध की भूमि-स्पर्श मुद्रा में विशाल मूर्ति है। यहाँ पर बौद्ध एवं हिन्दू समाज के अनुयायी दर्शन हेतु आते हैं। यहीं शिक्षा का महान केन्द्र तक्षशिला विश्वविद्यालय स्थापित था।

तक्षशिला (पाकिस्तान)

३. **पशुपतिनाथ मन्दिर** – यह मन्दिर नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में स्थित है। काठमाण्डू नगर विष्णुमती और बागमती नामक नदियों के संगम पर बसा है। बागमती नदी के तट पर नेपाल के रक्षक मछन्दरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) के मन्दिर और विष्णुमती नदी के तट पर 'पशुपतिनाथ' का मन्दिर है। पशुपतिनाथ महादेव मानुषीविग्रह (मनुष्य के समान मुख वाली मूर्ति) के रूप में विराजमान हैं। १५वीं शताब्दी के राजा प्रतापमल्ल से प्रारम्भ हुई परम्परा है कि मन्दिर में पुजारी (भट्ट) दक्षिण भारत के निवासी होते हैं।

पशुपतिनाथ (नेपाल)

ढाकेश्वरी शक्तिपीठ (बांग्लादेश)

४. **ढाकेश्वरी शक्तिपीठ** – बांग्लादेश की राजधानी ढाका का नाम ही इस शक्तिपीठ के कारण पड़ा। माता सती के कंठहार के गिरने से श्रद्धा केन्द्र बने इस स्थान का मंदिर १२वीं शताब्दी के सेन राजा बल्लाल सेन ने पुनः निर्मित करवाया था।

२. हमारा भारत राष्ट्र

Hkkjr d d.k&d.k e vfd r xkjoxku gekjk gA
ge fgUn ge Hkkj rok l h] fgUnLFkku gekjk gAA

हमारे राष्ट्र नायक

श्रीकृष्ण

भारतीय जनमानस को जिस महापुरुष ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वे यदुकुलनन्दन श्रीकृष्ण हैं।

द्वापर युग के अन्तिम चरण में मथुरा में कंस के अराजक शासन से जनता अत्यन्त त्रस्त थी। कंस ने अपने ही पिता राजा उग्रसेन को बन्दी बनाकर राज्यसत्ता अपने हाथ में ली थी। उसकी बहिन देवकी का विवाह वसुदेव के साथ हुआ था। भविष्यवाणी के अनुसार देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवें बालक के द्वारा ही कंस का वध होना था। अतः मृत्यु के भय से कंस ने वसुदेव-देवकी को कारागृह में डाल दिया और उनके सात पुत्रों की हत्या कर दी। आठवें पुत्र के रूप में कंस के कारागृह में ही श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। बालक की जीवन रक्षा के लिए वसुदेव ने उन्हें यमुनापार गोकुल ग्राम में राजा नन्द के यहाँ पहुँचा दिया। इस प्रकार बालक श्रीकृष्ण का लालन-पालन राजा नन्द और उनकी पत्नी यशोदा के द्वारा ब्रजभूमि में हुआ।

श्रीकृष्ण द्वारा कालिय मर्दन

कंस ने पूतना, धेनुकासुर, बकासुर जैसे अनेक असुरों को भेजकर कृष्ण की हत्या करवानी चाही पर उसके षड्यंत्र सफल न हो सके। श्रीकृष्ण ने उन सभी को मार डाला। उनकी विलक्षण बुद्धि और अद्वितीय पराक्रम की गाथाएँ दूर-दूर तक फैलने लगीं। कंस यह सुनकर और अधिक आतंकित हो गया।

ब्रज के लोग बाढ़ और अतिवृष्टि से बचने के लिए देवराज इन्द्र की पूजा करते थे, परन्तु यमुना नदी में बाढ़ आने से जन-धन की भारी क्षति होती थी। अतः श्रीकृष्ण ने ब्रज के सभी ग्वाल-बालों को संगठित कर, गोवर्धन पर्वत के समीप बाँध बनाया। इससे यमुना की धारा बदल गयी और बाढ़ से छुटकारा मिल गया। श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पूजा की परम्परा शुरु की। आज भी दीपावली के अगले दिन गोवर्धनपूजा की जाती है।

यमुना नदी के पास ही कालिय नामक एक नाग रहता था। वह अत्यन्त दुष्ट था जिसने सारे वातावरण को प्रदूषित कर रखा था। भगवान कृष्ण ने खेल-खेल में ही उसका दमन कर उसे यमुना से बाहर जाने को विवश कर दिया। ब्रज का सारा दूध-दही मथुरा में बिकने जाया करता था। इससे ग्रामीण बालकों को अपने

ही घर के दूध-दही से वंचित रहना पड़ता था। श्रीकृष्ण ने इन बालकों को संगठित कर नगरों में दूध-दही भेजना बंद करवाया। श्रीकृष्ण के समाज सुधार के कार्यों तथा ग्वाल-बालों की संगठित शक्ति से घबराकर कंस ने फिर एक षड्यंत्र रचा। उसने मथुरा में क्रीड़ा प्रतियोगिता आयोजित कर कृष्ण, बलराम को अपने शौर्य-पराक्रम का प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया।

गुरु सांदीपनि एवं कृष्ण-सुदामा

श्रीकृष्ण व बलराम के मथुरा पहुँचने पर उनकी हत्या करने के लिए उन पर कुवलियापीड नामक एक मदोन्मत्त हाथी को उकसाकर कुचलने के लिए बुलाया गया। जब यह कुटिल चाल असफल हो गई तब चाणूर और मुष्टिक नामक पहलवानों से उनकी कुश्ती करवाई गई। दुर्भाग्य से दोनों पहलवान भी कृष्ण-बलराम के हाथों मारे गए। तब अत्यन्त क्रोधित होकर कंस स्वयं तलवार लेकर कृष्ण को मारने खड़ा हो गया। किन्तु बड़ी कुशलता से श्रीकृष्ण ने उसको सिंहासन से खींचकर धरती पर पटका तथा उसका वध कर दिया। मथुरा का राज्य कंस के पिता उग्रसेन को सौंपकर, उन्होंने सम्पूर्ण ब्रज प्रदेश में सुख शान्ति की स्थापना की।

श्रीकृष्ण की शिक्षा-दीक्षा उज्जैन में सांदीपनि ऋषि के गुरुकुल में हुई। सुदामा उनके बाल सखा और प्रिय मित्र थे। इन्हीं दिनों हस्तिनापुर में कौरव-पाण्डवों के मध्य राजसत्ता का संघर्ष गहराने लगा था। पाण्डवों की माता कुन्ती श्रीकृष्ण की बुआ थी। पाण्डवों का पक्ष लेकर कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध प्रारम्भ होने के पहले निराश अर्जुन को श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता का पावन उपदेश दिया। अन्त में सदाचारी पाण्डवों की जीत हुई।

श्रीकृष्ण पराक्रमी होने के साथ-साथ सब प्रकार की नीतियों में कुशल थे। मगध नरेश जरासंध, शिशुपाल एवं दुर्योधन जैसे अहंकारियों का सर्वनाश कूटनीति के द्वारा ही करवाया था। गुजरात प्रदेश में द्वारकापुरी को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। जरासन्ध द्वारा अपहरण की गई सोलह हजार नारियों को कारागार से छुड़ाकर श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा की।

श्रीकृष्ण का आदर्श चरित्र योगेश्वर के रूप में हम सबके लिए अनुकरणीय है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अर्थात् जन्माष्टमी के दिन प्रत्येक भारतीय उनका जन्मोत्सव उल्लासपूर्वक मनाता है।

हमारे एकता बोधक तत्त्व

- भारत माता, गो माता, गंगा माता, गीता माता, तुलसी माता आदि को माँ मानना।
- सांस्कृतिक क्षेत्र – चार धाम, कुम्भ व अर्धकुम्भ स्थानों (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन व नासिक), ज्योतिर्लिंगों, शक्तिपीठों, नदियों, पर्वतों आदि को पवित्र तीर्थ मानना।
- साहित्य – षड्दर्शन, वेद-वेदांग, ब्राह्मण ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि को प्रेरणा का स्रोत मानना।
- पुनर्जन्म, मोक्ष, आत्मा-परमात्मा, कर्मफल के सिद्धान्त, भगवान के अवतार व महापुरुषों-श्रीराम, श्रीकृष्ण, गुरु नानक देव, महावीर, बुद्ध आदि के प्रति आस्था रखना।
- सन्त परम्परा का आदर, गेरुए वस्त्रों का सम्मान, समान उत्सव, श्रेष्ठ परम्पराएँ, मान्यताएँ, खेल आदि का सम्मान करना।

संतवाणी

बड़े बड़ाई नहिं करैं, बड़े न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरा मोल।।१।। (अपनी प्रशंसा न करना।)

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।२।। (अपनी कमियों को पहचानकर उन्हें दूर करना)

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।३।। (आलस्य का त्याग करना।)

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप।।४।। (सत्य का पालन करना।)

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।५।। (सज्जन पुरुष कुसंग से प्रभावित नहीं होते।)

प्रातःस्मरणम्

हमारे प्रत्येक दिन का आरम्भ भगवान, मातृभूमि, प्रकृति और महान ऋषियों के स्मरण के साथ होने से दिन मंगलमय बन जाता है, इसलिए प्रातःकाल उठते ही अपने दोनों हाथों को देखते हुए प्रातःस्मरण के ये श्लोक कहना चाहिए –

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्।।१।।

भावार्थ – हाथ के आगे वाले भाग में लक्ष्मी, बीच में सरस्वती का और मूल में गोविन्द (भगवान) का निवास है। इसलिए नित्य प्रातः दोनों हाथों के (जो पुरुषार्थ का प्रतीक हैं) दर्शन करने चाहिए।

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥२॥

भावार्थ – हे समुद्ररूपी वस्त्र पहने हुए देवि! पर्वत आपके वक्ष हैं अर्थात् स्तन-मण्डल हैं। हे विष्णु-पत्नि! मै आपको प्रणाम करता हूँ और दैनिक गतिविधियों के लिए तेरे शरीर पर पांव रखने के लिए क्षमा माँगता हूँ।

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशिभूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥३॥

भावार्थ – ब्रह्मा (सृष्टि कर्ता), मुरारि (विष्णु), त्रिपुरान्तकारी (त्रिपुरासुर का अन्त करने वाले शिव), सूर्य, चन्द्र, भूमिसुत (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सब मेरे लिए मंगलकारी प्रभात करें।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्तस्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥४॥

भावार्थ – सनत्कुमार, सनक, सनन्दन व सनातन (ब्रह्मा जी के मानस पुत्र), ऋषि आसुरि (सांख्यदर्शन प्रवर्तक ऋषि कपिल के शिष्य); ऋषि पिंगल (छन्दःशास्त्र रचयिता), सातों स्वर (षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद) तथा सात अधोलोक (अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल और पाताल), ये सब मेरे लिए शुभ प्रभात करें।

सप्तार्णवाः सप्तकुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीप वनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥५॥

भावार्थ – सात समुद्र (लवणाब्धि, इक्षु, सुरावर्ण, आज्य, दधि, क्षीर और स्वादु-जल सागर); सात पर्वत (महेन्द्र, मलय, सह्याद्रि, शुक्तिमान, ऋक्षवान् विन्ध्य तथा पारियात्र); सात ऋषि (कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम जमदाग्नि तथा वसिष्ठ), सात द्वीप (जम्बु, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौंच, शाक तथा पुष्कर); सात वन (दण्डकारण्य, खण्डारण्य, चम्पकारण्य, वेदारण्य, नैमिषारण्य, ब्रह्मारण्य तथा धर्मारण्य) और सात भुवन अर्थात् स्वर्गलोक (भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्) मेरे लिए मंगलकारी प्रभात करें।

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुर्ज्वलनं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥६॥

भावार्थ – गन्ध वाली पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्श गुण-युक्त वायु, तेज-गुण वाली अग्नि, शब्द-गुण वाला आकाश, ये सब बुद्धि तत्त्व के सहित मेरे लिए कल्याणकारी प्रभात करें।

प्रातःस्मरणमेतद् यो विदित्वादरतः पठेत।
स सम्यक् धर्मनिष्ठः स्यात् संस्मृताऽखंड भारत॥७॥

भावार्थ – इस प्रातः स्मरण को ठीक से समझकर, आदर के साथ, विधि पूर्वक जो नित्य पाठ करेगा वह पूर्णतया धर्मनिष्ठ होगा और उसके हृदय में अखण्ड भारत का चित्र नित्य विद्यमान रहेगा।

३. हमारी भारतीय संस्कृति

viuh lLÑfr viuk n'k] bu ij gedk xo fo'k"kA
lnkpkj vkj jk"VHkfDr dk ik, ge bul ln'kAA

प्रत्येक देश के लोगों की जीवन जीने की शैली अलग-अलग होती है। यह जीवनशैली ही संस्कृति कहलाती है। संस्कृति धर्म का अनुसरण करती है। इसलिए धर्म के अनुसार की गई कृति को भी संस्कृति कहते हैं। संस्कृति न दिखाई देने वाला सूक्ष्म तत्त्व है जबकि सभ्यता दिखाई देने वाला उसका स्थूल रूप है। संस्कृति कभी बदलती नहीं, परन्तु सभ्यता समय-समय पर बदलती रहती है।

सत्कर्म

मुख से निकले प्रभुनाम सदा।
हाथों से हों सत्कार्य सदा॥ हरिओम् हरिओम् गुंजार सदा॥

अच्छे कामों को ही सत्कर्म कहा जाता है। सत्कर्मों को ही सच्चा धर्म माना गया है। सत्कर्मों से सबको आनन्द और सन्तोष प्राप्त होता है। अच्छे कर्म का फल भी अच्छा ही होता है। सत्यपालन, दया करना, किसी को न सताना तथा माता-पिता और गुरुजनों की सेवा करना आदि, ये सभी सत्कर्म हैं। इनको व्यवहार में लाना ईशभक्ति है। इसीलिए तो सत्य के पालनकर्ता हरिश्चन्द्र तथा श्रीराम, दया और करुणा का व्यवहार करने वाले राजा शिवि, राजा रन्तिदेव, गोरक्षा के लिए अपना शरीर अर्पित करने वाले राजा दिलीप, माता-पिता की सेवा करने वाले श्रवण कुमार तथा गुरु की सेवा में श्रद्धापूर्वक लगे रहने वाले आरुणि, उपमन्यु आदि सभी सत्कर्म करने वाले ईश्वर भक्त कहलाते हैं। अतिथि के आदर-सत्कार को भी हमने श्रेष्ठ कर्म माना है। माता-पिता, गुरु व अतिथि की सेवा और सत्कार को देव पूजा अर्थात् ईश्वर की पूजा माना गया है। हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव" - का आचरण होता आया है, अर्थात् माता-पिता, गुरु और अतिथि को देवताओं के समान मानो। माता-पिता अर्थात् परिवार के सभी बड़े और आचार्य अर्थात् सभी ज्ञानी, सन्त तथा सदाचारी श्रेष्ठ पुरुष मानना चाहिए।

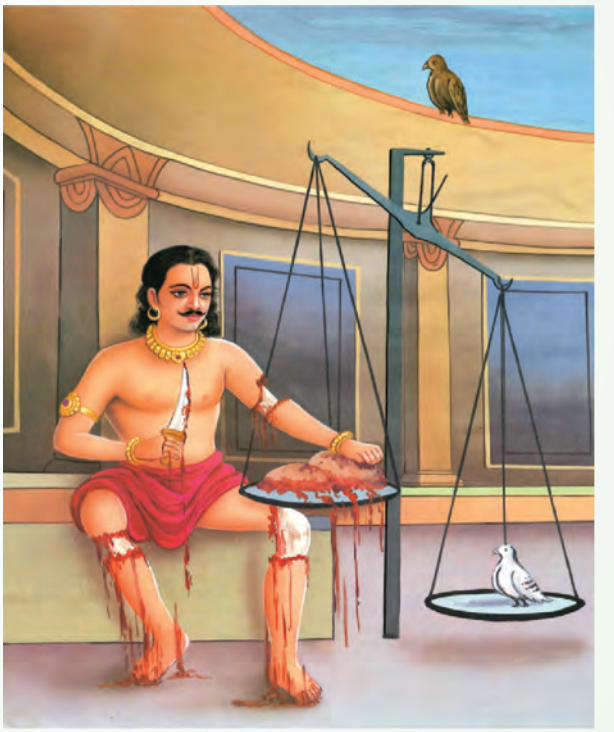

शरणागतवत्सल राजा शिवि

(क) रिक्त स्थान भरें –

१. -------- को ही सच्चा धर्म माना गया है। **(सत्कर्मों)**

२. माता-पिता और गुरुजनों की सेवा करना भी ------ है। **(सत्कर्म)**

३. अतिथि के आदर-सत्कार को भी हमने ----- माना है। **(श्रेष्ठ कर्म)**

४. माता-पिता, गुरु और अतिथि को ------ माना गया है। **(देवता)**

५. अच्छे -------- का फल भी अच्छा ही होता है। **(कर्म)**

६. सत्कर्म करने से सब को ----- प्राप्त होता है। **(आनन्द और सन्तोष)**

७. श्रवण कुमार का नाम ------ के कारण से लिया जाता है। **(माता-पिता की सेवा)**

८. आरुणि, उपमन्यु के नाम ----- के लिए, लिए जाते हैं। **(गुरु सेवा)**

वैदिक शिक्षा

शिष्य को उपदेश देते गुरु

- सत्यं वद – सच बोलें।
- धर्मं चर – धर्म का पालन करें।
- स्वाध्यायान्मा प्रमदः – स्वाध्याय में आलस्य न करें।
- श्रद्धया देयम् – श्रद्धापूर्वक देना चाहिए।
- मातृदेवो भव – माता को देवता मानें।
- पितृदेवो भव – पिता को देवता मानें।
- आचार्यदेवो भव – आचार्य को देवता मानें।
- अतिथिदेवो भव – अतिथि को देवता मानें।

संस्कारों की पावन परम्परा

संस्कृति के महान विचार-सूत्र ही व्यवहार में पर्व, तीर्थ, मन्दिर, सद्ग्रन्थ, सन्तवाणी, शिष्टाचार एवं सोलह संस्कार आदि प्रतीकों के रूप में प्रचलित हुए। संस्कारों के माध्यम से संस्कृति के प्रति गौरव का भाव आता है तथा जीवन की सही दिशा मिलती है।

संस्कारों का महत्त्व

हिन्दू जीवन पद्धति में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। व्यक्ति को समाज का अच्छा नागरिक बनाने के लिए बचपन से ही उसके क्रियाकलापों को सही दिशा मिल जाए तो समाज को एक अच्छा नागरिक मिल सकता है। मनुष्य का आचरण उसके व्यक्तित्व की व्याख्या करता है। संस्कार उस नींव का नाम है, जिस पर व्यक्तित्व का भवन खड़ा होता है। सुसंस्कारित और गुणवान व्यक्ति अपने चरित्र से जाना जाता है।

अच्छे गुणों को अपनाने का नाम ही संस्कार है। संस्कारों से मनुष्य चरित्रवान तथा सदाचारी बनता है। सुसंस्कृत व्यक्ति ही अपने कर्त्तव्यों को निभा सकता है तथा अपने जीवन के उद्देश्य तक पहुँच सकता है। शास्त्रों में जन्म के पहले से लेकर मृत्यु के बाद तक के संस्कारों का विधान किया गया है। महर्षि व्यास द्वारा बताए गए १६ संस्कारों की मान्यता है। यहाँ तीन संस्कारों को जानते हैं :-

१. नामकरण संस्कार - यह संस्कार बालक या बालिका के नाम रखने से सम्बन्ध रखता है। यह संस्कारों की सूची में ५वाँ संस्कार है। सामान्यत: जन्म से ११वें दिन नामकरण संस्कार करने का नियम है। 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार नाम का जीवन पर प्रभाव पड़ता है। अत: नाम ऐसा होना चाहिए जो उच्चारण में सरल, अच्छे अर्थ वाला, मनोहर तथा शुभ का सूचक हो। नाम से ही पहचान होती है और नाम से ही मनुष्य कीर्ति प्राप्त करता है। नामकरण करते समय वंश व गोत्र परम्परा का ध्यान रखा जाता है।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का नामकरण संस्कार

२. निष्क्रमण संस्कार – यह संस्कार साधारण भाषा में पहली बार नवजात शिशु को घर से बाहर ले जाने का संस्कार है। सूर्य तथा चन्द्रमा आदि देवताओं का पूजन कर बालक को उनके दर्शन कराना इस संस्कार की मुख्य प्रक्रिया है। बालक का पिता इस संस्कार के माध्यम से आकाश आदि पंचभूतों से बालक के कल्याण की कामना करता है। आँगन या घर के सामने सफाई करके वहाँ स्वास्तिक का चिह्न बनाया जाता है। धान के लावे (खील) बिखेरे जाते हैं। तब उस स्थान पर नवजात शिशु को ले जाया जाता है और सर्वप्रथम उसे सूर्य देवता का दर्शन कराया जाता है। जिससे वह प्रकृति से अपना सम्बन्ध जोड़ता है।

३. अन्नप्राशन संस्कार – जब शिशु ६–७ मास का होता है, उस समय उसके दाँत निकलने लगते हैं और पाचन शक्ति बढ़ने लगती है। तब बालक को प्रथम बार अन्न खिलाने का विधान है। शुभ मुहूर्त में देवताओं का पूजन करने के बाद माता–पिता या वरिष्ठ व्यक्ति चम्मच से शिशु को खीर आदि पवित्र और पुष्टिकारक अन्न चटाते हैं। इस संस्कार का स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्त्व है। इससे शिशु के शरीर और मन का विकास होता है।

हमारी मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार

१. तिलक धारण का वैज्ञानिक आधार –

हमारे ज्ञान तन्तुओं का विचारक केन्द्र भृकुटि और ललाट का मध्य भाग है। जब हम मस्तिष्क से अधिक काम लेते हैं, मन में विचारों का कम्पन होता है तो इसी केन्द्र में वेदना का अनुभव होता है। अतः हमारे ऋषियों ने तिलक धारण करने का विधान किया। मस्तिष्क के केन्द्र बिन्दु पर तिलक ज्ञान तन्तुओं को संयमित व सक्रिय रखता है तथा इससे मेधा शक्ति तेज होती है।

मस्तक पर सुशोभित तिलक

२. पूजा–पाठ या धार्मिक कार्य पूर्वाभिमुख होकर करने का कारण –

प्रसिद्ध लोकोक्ति है कि उदय होते हुए सूर्य को सारा संसार नमस्कार करता है क्योंकि उसमें आगे बढ़ने, उन्नति करने, ऊँचा उठने का सन्देश छिपा होता है। ब्रह्ममुहूर्त से लेकर मध्याह्न तक सूर्य का सौम्य आकर्षण, सामने रहने से हमारे ज्ञानतन्तु अधिक स्फूर्ति सम्पन्न रहेंगे जिससे दैवीय गुणों के विकास के कारण हमारे धार्मिक अनुष्ठान भी प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

३. पीपल के वृक्ष की उपयोगिता –

वैज्ञानिक अनुसन्धान से पता चला है कि पीपल प्रचुर मात्रा में जीवनोपयोगी ऑक्सीजन का विसर्जन करता है। इसकी छाया सर्दी में उष्णता प्रदान करती है तथा गर्मी में शीतलता देती है। वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार इसके पत्ते, फल, छाल सभी रोग–नाशक हैं। अतः पीपल का पेड़ मानव–जीवन के लिए अत्यन्त हितकारी है।

४. हमारी परिवार व्यवस्था

nknk&nknh] ekr&fir k lc Hkkb&cfgu fey dj ifjokj A
lkFk&lkFk jgr g lkj] [kc yVkr ge ij l;kj AA

परिवार हमारी प्रथम पाठशाला और माँ प्रथम गुरु है। परिवार में स्वजनों के प्रति आदर और सेवा का भाव हमारे हृदय में रहना चाहिए क्योंकि वे हमें अच्छी बातें सिखाते हैं। परिवार के प्रति हमारे अनेक कर्तव्य हैं।

प्रश्न-१ पहली पाठशाला किसे कहा गया है?

उत्तर परिवार हमारी पहली पाठशाला, माता ही प्रथम गुरु है। धन्य हैं वे लोग, जो माँ से सीख पाते हैं।

प्रश्न-२ परिवार में क्या केवल माँ ही सिखाने का कार्य करती है?

उत्तर नहीं। परिवार में सभी एक-दूसरे से सीखने और सिखाने का कार्य करते हैं।

भारतीय परिवार

प्रश्न-३ परिवार प्रथम पाठशाला है तो विद्यालय की क्या आवश्यकता है?

उत्तर परिवार खेल-खेल में बिना औपचारिकता के शिक्षा देते हैं। विद्यालय औपचारिक पाठशाला है, जिसके अनेक नियम, व्यवस्थाएँ होती हैं जिनको जानना और पालन करना अनिवार्य होता है। अत: विद्यालय में जाकर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

प्रश्न-४ परिवार में सभी एक दूसरे को बहुत अधिक प्रेम क्यों करते हैं?

उत्तर परिवार में सभी का रक्त सम्बन्ध होता है। जिसके कारण जन्म से ही अपनेपन की भावना अर्थात् अपनत्व पैदा हो जाता है। अपनत्व के कारण ही सभी आपस में प्रेम से रहते हैं तथा एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं।

प्रश्न-५. परिवार में हमारे लिए करणीय कार्य क्या हैं?

उत्तर हम परिवार में अपनी इच्छा और सहयोग से अनेक कार्य कर सकते हैं - अपना सामान यथा-स्थान रखना, पूजा स्थल और घर में सफाई करना और पौधों में पानी डालना। गाय को पहली रोटी और कुत्ते को आखिरी रोटी खिलाना। परिवार के स्वजन की आज्ञा का पालन करना। भोजन, भजन व भ्रमण साथ में करना अच्छे परिवार की पहचान है।

प्रश्न-६ रक्त सम्बन्धी कौन कौन होते हैं?

उत्तर यहाँ कुछ रक्त सम्बन्ध पढ़िये और परिवार में उचित सम्बोधन से सम्बन्धियों को सम्बोधित करें, उनका आदर और अभिवादन करें-

परिवार में रक्त सम्बन्ध

१.	माता-पिता का पुत्र	भाई	७.	पुत्र की पत्नी	पुत्र-वधू
२.	माता-पिता की पुत्री	बहन	८.	पुत्री का पति	दामाद/जामाता
३.	माता का भाई	मामा	९.	बहन का पति	जीजा, बहनोई
४.	पिता का भाई	छोटा-चाचा, बड़ा-ताऊ	१०.	पत्नी का भाई	साला
			११.	पति का छोटा भाई	देवर
५.	पिता की बहन	बुआ/फूआ	१२.	पति का बड़ा भाई	जेठ
६.	माता की बहन	मौसी	१३.	छोटे भाई की पत्नी	अनुज वधू/भावज

आहार-विहार

ठीक ही कहा गया है कि 'तन अच्छा, तो मन अच्छा। मन अच्छा, तो सारा संसार अच्छा।' शरीर में बीमारी हो, तो कुछ नहीं सुहाता। न सगे-सम्बन्धी अच्छे लगते हैं, न संगी-साथी। ऐसे में ढेर-सा रुपया-पैसा पास हो, तो भी खुशी नहीं मिल पाती।

आज मनुष्य न जाने क्यों स्वास्थ्य रूपी इस श्रेष्ठ धन-सम्पदा को पाने का प्रयत्न ही नहीं करता? पेट के लिए लोग पूरी आयु रुपया-पैसा कमाने में बिता देते हैं। पेट भरने के लिए जो भी भोजन सामने आया, अतिशीघ्र निगलकर भोजन को सम्मान नहीं देते। अभिप्राय केवल पेट भरने और भूख मिटाने से है क्या? उसका दूरगामी प्रभाव शरीर पर क्या पड़ेगा, इस ओर तो विचार करने का समय ही कहाँ है? अच्छा स्वास्थ्य रहे, उसके लिए सन्तुलित-पौष्टिक आहार व ऋतु अनुकूल उचित विहार परम आवश्यक है।

स्वदेशी और स्वावलम्बी

यही मन्त्र है यही साधना, भारत भाग्य बनाना है।
तन्त्र स्वदेशी मन्त्र स्वदेशी, भाव स्वदेशी लाना है।

पेड़ और पौधे प्रकृति के अंग हैं और वे कहीं से कुछ माँगने नहीं जाते। वे स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। केवल इतना ही नहीं, वे संसार को फल, फूल आदि अनेकानेक उपहार भी देते हैं।

हमारी मातृभूमि भी ऐसी ही है। उसमें हर प्रकार की वस्तुएँ सुलभ हैं। प्राचीनकाल से हमारे देशवासियों ने अपने ही साधनों द्वारा, संसार को प्रत्येक क्षेत्र में बहुत कुछ दिया है। हमारी मातृभूमि ने उन्हें शरण दी है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता ने संसार को बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया है।

अब पुनः हमारा देश अपना प्राचीन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करने की राह पर अग्रसर है। हमें उसके लिए 'स्वावलम्बी' होना पड़ेगा। अपने देश में, अपने देशवासियों के परिश्रम से बनायी जाने वाली वस्तुएँ, जिनका लाभ अपने ही देश को हो, स्वदेशी कहलाती हैं। 'स्वदेशी' को अपनाकर हम न केवल अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकते हैं, अपितु अपने देश, देशवासियों और स्वयं का मस्तक ऊँचा कर सकते हैं। केवल स्वदेशी अपना कर ही हम स्वावलम्बी बन सकते हैं।

यही तो भारत की पहचान है। यही तो भारतीयता की पहचान है। स्वदेशी श्रेष्ठ है। स्वदेश महान् है।

स्वप्रेरणा से निम्नलिखित के उत्तर दीजिए -

१. 'स्वदेशी' क्या है?
२. आज स्वदेशी अपनाना अनिवार्य क्यों है?
३. स्वदेशी चीजों के प्रयोग से अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
४. भारत को विश्वगुरु बनाने में हमारा क्या योगदान हो सकता है?

सद्‌गुण विकास

भारत महापुरुषों का देश है। यहाँ अनेक ऐसे महापुरुषों का आविर्भाव हुआ जो सद्‌गुणों से परिपूर्ण थे। इन महापुरुषों की जीवनयात्रा का अनुकरण कर देश के अति-साधारण जन भी श्रेष्ठता को प्राप्त हो सकते हैं और देश निर्माण में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। इस हेतु विद्यार्थियों के लिए कुछ गुणों पर विचार करते हैं–

१. **स्वच्छता** - प्रत्येक व्यक्ति का तन व मन स्वच्छ होना अति आवश्यक है। दैनिक जीवन में प्रतिदिन स्नान करें, दाँत साफ करें, स्वच्छ कपड़े पहनें, खाने से पहले हाथ धोवें, अपने घर तथा आसपास सफाई रखें आदि। मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता आवश्यक है।

२. **बड़ों का सम्मान**- हमें अपने माता और पिता, दादा और दादी, नाना और नानी, रिश्तेदार, बड़े एवं आसपास रहने वाले बड़े लोगों का सम्मान करना चाहिए। प्रतिदिन माता-पिता के चरणस्पर्श करना, उनकी आज्ञा का पालन करना तथा बड़ों द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलना तथा उनके प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए।

३. **प्रकृति प्रेम** - प्रकृति को क्षति न पहुँचायें। पेड़-पौधों में भी जीवन है। अतः घर और विद्यालय में पेड़-पौधे लगायें और उनकी सुरक्षा करें। फूल-पत्तियाँ तोड़कर वृक्षों को क्षति न पहुँचाएँ। घर में क्यारियों तथा गमले आदि में समय पर पानी दें। घर के पास स्थित बाग-बगीचे में जाएँ तथा वहाँ के पेड़-पौधों का भी ध्यान रखें।

४. **अहिंसा** - अहिंसा अर्थात् हिंसा नहीं करना। किसी को कष्ट न पहुँचाना, लड़ाई-झगड़ा नहीं करना, सब के साथ मिल-जुलकर रहना। किसी के प्रति ईर्ष्या न रखें। कठोर वाणी का प्रयोग भी हिंसा है, अतः यह न करें।

शिष्टाचार –

शिष्टाचार ऐसा गुण है जो किसी भी बालक को अपने आचार्य, माता-पिता तथा सभी लोगों के बीच प्रिय बना देता है। अत: नीचे लिखे आचरण को आप अपने जीवन में उतारें –

१. किसी से भी -------- बात करनी चाहिए। **(विनम्रतापूर्वक)**

२. बड़ों का सदैव -------- करना चाहिए। **(सम्मान)**

३. आगन्तुकों को दोनों हाथ जोड़कर -------- करना चाहिए। **(नमस्ते/प्रणाम)**

४. जब दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे हों तो आप बीच में नहीं ---- । **(बोलें)**

५. अच्छे बच्चे बिना पूछे किसी का कोई सामान नहीं -------- हैं। **(लेते/छूते)**

६. पूजा-पाठ में अच्छे बच्चे सदा -------- लेते हैं। **(भाग)**

७. आप कक्षा में आचार्य जी से -------- लेकर प्रवेश करते हैं। **(अनुमति)**

८. अच्छे बच्चे हमेशा -------- होकर आचार्य जी से बात करते हैं। **(खड़े)**

९. कोई भी व्यक्ति या जीव जन्तु को -------- नहीं देना चाहिए। **(कष्ट)**

व्यवस्थाप्रियता –

अच्छे बच्चों को हमेशा व्यवस्थित रहना चाहिए। व्यवस्थित घर तथा दिनचर्या से मन हमेशा प्रसन्न रहता है तथा कामों में सरलता होती है। हमें निम्न बातों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए –

१. प्रात:काल जगते ही अपनी बिछावन ------ करना चाहिए। **(ठीक)**

२. सदा साफ-सुथरे ---- ही पहनना चाहिए। **(वस्त्र)**

३. अपनी पुस्तकों तथा पुस्तिकाओं में हमेशा ---- लगाकर रखना चाहिए। **(आवरण)**

४. गृहकार्य ------ ही विद्यालय जाना चाहिए। **(करके)**

५. किसी भी वस्तु को सर्वदा यथास्थान ही ------ चाहिए। **(रखना)**

६. विद्यालय के नियमों का हमेशा ------ करना चाहिए। **(पालन)**

७. विद्यालय से आने के बाद अपने वेश, बस्ते जूते आदि को धीरे से ---- स्थान पर रखना चाहिए। **(निर्धारित)**

श्रमनिष्ठा –

श्रम जीवन का मूल मन्त्र है, श्रम अपना है सच्चा मित्र।
बिना परिश्रम सफलता का नहीं बनता है उजला चित्र।
श्रम जीवन है, श्रम पूजा है, श्रम करके समझाएँ हम।
धरती स्वर्ग बनाएँ हम, धरती स्वर्ग बनाएँ हम।

श्रम के बल पर ही हम आगे बढ़ते हैं। अत: घरेलू कार्यों में तथा पढ़ाई-लिखाई में खूब श्रम करना चाहिए। प्रात:काल योग तथा शारीरिक व्यायाम करने में पसीना आ जाने तक श्रम करना चाहिए।

मित्रता -

मित्र ईश्वर का अनुपम उपहार है। अत: अपने मित्रों के साथ सदा अच्छा व्यवहार करना चाहिए। मित्र की सदा सहायता करनी चाहिए। उसके सुख-दु:ख में सहभागी होना चाहिए। मित्र को हमेशा अच्छे आचरण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भगवान राम और सुग्रीव तथा भगवान श्रीकृष्ण तथा सुदामा की मित्रता प्रसिद्ध है।

गीत

बाल हैं गोपाल हैं, हम भारत के भाल हैं।।
पुरुषोत्तम मर्यादा धारी, द्वापर में हम कृष्ण मुरारी
हर युग में कर धर्म ध्वजा ले, वैजन्ती गल माल हैं।
हम भारत के भाल हैं ।।१।।

वीर शिवा राणा अभिमानी, गुरुगोविन्दसिंह से बलिदानी
बन्दा बैरागी जैसों के तेजस्वी हम लाल हैं।
हम भारत के भाल हैं।।२।।

नाना, तात्या, रानी झांसी, प्रलयंकर बन चूमी फांसी
पाण्डे मंगल, कूका, फड़के धधक उठे वे ज्वाल हैं।
हम भारत के भाल हैं ।।३।।

भगतसिंह, सुखदेव, आजाद, सावरकर, सुभाष फौलाद
मदन धींगरा, ऊधम, गांधी, लाल, बाल, पाल हैं।
हम भारत के भाल हैं।।४।।

दयानन्द, अरविन्द, विवेका, एक तत्त्व के रूप अनेका
दिव्य ज्योति केशव-माधव की स्पन्दित हर प्राण हैं।
हम भारत के भाल हैं।।५।।

भारतीय भाषाएँ

rjh ejh U;kjh Hkk"kk] fdruh I;kjh I;kjh Hkk"kkA
,d nIj Ifey Ih[k] Hkkjr ek dh Ikjh Hkk"kkA

भाषा वह साधन है जो वक्ता के भाव व विचार श्रोता तक उसी अर्थ में प्रेषित करने में समर्थ होती है। मानव समाज में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। प्राचीन काल में भाषा संकेतों के रूप में प्रयोग होती थी। धीरे-धीरे भाषा व लिपि का विकास हुआ।

सभी भारतीय भाषाओं की शब्दावली सीखकर हम अन्य प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषाओं के शब्दों को सीख सकते हैं। तो आइए, दस भारतीय भाषाओं में १ से १० तक गिनती सीखें -

अभिवादन -

हिन्दी - नमस्ते
बंगाली - नोमोस्कार
तेलुगु - नमस्कारम्
मराठी - नमस्कार
तमिल - वणक्कम्
गुजराती - नमस्ते
कन्नड़ - नमस्कारा
पंजाबी - सत् श्री अकाल
मलयालम - नमस्कारम्
असमिया - नोमोस्कार

गिनती	हिन्दी	बंगला	तेलुगु	मराठी	तमिल	गुजराती	कन्नड़	पंजाबी	मलयालम	संस्कृत
१	एक	ऐक	ओक्टी	इक	ओनरू	एक	ओन्दू	इक	ओन्न	एकम्
२	दो	दुई	रेंडू	दोन	इरेंडू	बे	एरडू	दो	रन्ड	द्वै
३	तीन	तिन	मुडू	तीन	मुनरू	त्रण	मुरू	तिन	मून्न	त्रीणि
४	चार	चार	नलगू	चार	नानकू	चार	नालु	चार	नाल	चत्वारि
५	पाँच	पाँच	आइडू	पच	ऐन्तू	पांच	आइडू	पंज	अंज	पंच
६	छः	छोय	आरू	सहा	अरू	छ	आरू	छे	आर	षट्
७	सात	सात	एडू	सात	इलू	सात	इलू	सत	एर्र	सप्त
८	आठ	आठ	इन्मिडी	आठ	इत्तू	आठ	एट्टू	अठ	एट्ट	अष्ट
९	नौ	नोय	तोमिडी	नऊ	ओनपट्टू	नव	ओम्बटू	नौ	ओम्बद्	नव
१०	दस	दोस	पदाकोंडू	दहा	पट्टू	दस	हट्टू	दस	पत्त	दश

५. हमारी ज्ञानपरम्परा

on] 'kkL=] xhrk] jkek;.k] lnxUFkk dh ijEijkA
èkU; Kku&foKku foHkf"kr] Hkkjr tuuh i.;èkjkAA

श्रीरामचरितमानस प्रसंग

भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्त्व सबसे अधिक है। गुरु हमें जीवन जीने का मार्ग बताते हैं। श्रीरामचरितमानस में गुरु की महिमा बताई गई है –

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू।।

तुलसीदास

अर्थ– मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुन्दर स्वाद), सुगन्ध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुन्दर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।
दलन मोह तम सेा सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू।।

अर्थ– श्रीगुरु महाराज के चरण–नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करने वाला है; वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।।
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक।।

अर्थ– उसके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसाररूपी रात्रि के दोष–दु:ख मिट जाते हैं। श्रीरामचरित्ररूपी मणि और माणिक्य, गुप्त और प्रकट जहाँ जो जिस खान में हैं, सब दिखायी पड़ने लगते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीगीताजी का प्रथम श्लोक धृतराष्ट्र द्वारा पूछा गया एक प्रश्न है। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे और हस्तिनापुर के राजा थे। अपने सारथी संजय के माध्यम से धृतराष्ट्र महाभारत युद्ध की सम्पूर्ण वार्ता सुन रहे थे। संजय द्वारा समय-समय पर कुल ४१ श्लोक कहे गए हैं।

अर्जुन पाण्डवों की सेना के प्रमुख योद्धा एवं नायक थे। उनके द्वारा ८४ श्लोक कहे गए हैं। इनमें अर्जुन द्वारा जिज्ञासा, प्रश्न और भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति भी है। भगवान श्रीकृष्ण युद्ध में अर्जुन के सारथी की भूमिका में थे। अर्जुन के सभी प्रश्नों का उत्तर श्रीकृष्ण ने दिया था। महाभारत में सबसे अधिक ५७४ श्लोक भगवान श्रीकृष्ण की वाणी हैं। अधोलिखित श्लोक हमें श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व बताता है –

श्रीकृष्ण-अर्जुन

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता॥
(महाभारत भीष्म पर्व ४३/१)

अर्थात् गीता का ही भलीभाँति अध्ययन करना चाहिए। गीता स्वयं पद्मनाभ विष्णु भगवान् के साक्षात् मुखकमल से निकली हुई है फिर अन्य शास्त्रों के संग्रह की क्या आवश्यकता है? गीता जी में समस्त शास्त्रों का सार समाहित है।

आइये, श्रीमद्भगवद्गीता के बारे में कुछ अधिक जानें -

प्रश्न : श्रीमद्भगवद्गीता में कितने अध्याय एवं श्लोक हैं?

उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता में कुल १८ अध्याय और ७०० श्लोक हैं।

प्रश्न : अर्जुन की दुविधा क्या थी और उस दुविधा का निवारण कैसे हुआ?

उत्तर युद्ध आरम्भ होने के ठीक पहले अर्जुन की प्रार्थना पर भगवान श्रीकृष्ण ने उसका रथ दोनों सेनाओं के मध्य खड़ा कर दिया। कौरवों की सेना में अपने अनेक गुरुजनों, सम्बन्धियों को देखकर अर्जुन मोहग्रस्त हो गए एवं गाण्डीव धनुष नीचे रखकर, युद्ध न करने की इच्छा प्रकट करने लगे। वे भगवान श्रीकृष्ण का शिष्यत्व स्वीकार करते हुए मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं। अर्जुन के सभी संशय दूर करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण सभी ज्ञान-पक्षों को विस्तार से समझाते हैं। फलस्वरूप, अर्जुन युद्ध करना स्वीकार करते हैं।

प्रश्न : श्रीमद्भगवद्गीता का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम शब्द है 'धर्म' और अन्तिम शब्द है 'मम' अर्थात् मेरा। श्रीमद्भगवद्गीता "जीवन जीने की कला" की शिक्षा प्रदान करती है।

शिष्य भाव-भावना क्यों?

बचपन में जीने के तरीकों में से सबसे प्रथम व प्रमुख करने योग्य काम है माता-पिता व शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना, उनके बताए अनुसार कार्य सीखना। श्रीमद्भगवद्गीता बताती है कि सीखने के लिए सबसे पहले 'शिष्य' बनना आवश्यक है। जैसे अर्जुन जब युद्ध भूमि पर सोचने की शक्ति खो बैठते हैं तब श्रीकृष्ण की शरण में जाते हैं। श्रीकृष्ण को अपना गुरु मानते हैं और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं।

शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥२/७॥

अर्थात् मैं आपका शिष्य हूँ (इसलिए) आपके शरण हुए मुझको शिक्षा दीजिए।

हमें जीवन रूपी युद्ध में उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती ही है। अति ज्ञानवान-गुणवान-बलवान होने के उपरान्त भी अर्जुन को उस आपातकालीन पड़ाव पर शिक्षक की आवश्यकता हुई थी। अत: कलियुग के इस कठिन समय में हमें कर्तव्य-कर्म का उचित मार्ग दिखाने वाले की आवश्यकता पड़े तो आश्चर्य कैसा? वैसे भी, मनुष्य जीवन भर सीखता रहता है और सीखने के लिए एक समर्थ गुरु की आवश्यकता होती है क्योंकि स्वयं का सर्वगुणसम्पन्न होना असम्भव है।

सीखने के प्रारम्भिक वर्षों में माता-पिता व शिक्षकों से अच्छा पथ-प्रदर्शक कौन हो सकता है? अर्जुन जैसी गतिरोध की अवस्था में पड़ने से पहले ही हमें समस्याओं के समाधान खोज लेने चाहिए। यह तभी सम्भव है जब दैनिक जीवन में अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते रहें, संशय दूर करते रहें।

शिष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

श्रीगीताजी शिष्य के व्यवहार के विषय में कहती हैं :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ॥४/३४॥

अर्थात् भलीभाँति दण्डवत प्रणाम करने से, सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से....

और, **श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम् ॥४/३९॥**

अर्थात् श्रद्धावान् होने से मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है।

अत: सरलता, सौम्यता, विनम्रता, श्रद्धा, विश्वास, जानने-सीखने की प्रबल इच्छा, अनावश्यक तर्कों से परहेज की भावना सदैव जीवन्त रखने की शिक्षा श्रीमद्भगवद्गीता प्रदान करती है। यही शिष्य के लिए लाभकारी है, शिष्य से अपेक्षित है। इसके फलस्वरूप सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्रश्न- श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कितने श्लोक कहे हैं? **(५७४ श्लोक)**

प्रश्न- सीखने के लिए सबसे पहले क्या आवश्यक है? **(शिष्य बनना)**

प्रश्न- किस मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है? **(श्रद्धावान मनुष्य को)**

प्रश्न– किस शास्त्र को पढ़ने के बाद अन्य शास्त्रों के संग्रह की आवश्यकता नहीं रह जाती है?

(श्रीमद्भगवद्गीता)

प्रश्न– महाभारत युद्ध में अर्जुन के सारथी कौन थे? **(भगवान श्रीकृष्ण)**

प्रश्न– धृतराष्ट्र किसके माध्यम से महाभारत युद्ध की सम्पूर्ण वार्ता सुन रहे थे?

(संजय के माध्यम से)

प्रश्न– महाभारत के रचयिता कौन हैं? **(महर्षि वेदव्यास)**

प्रश्न– महाभारत में कितने पर्व (भाग) हैं? **(१८ पर्व)**

योग का महत्त्व

वे विषय जिनके कारण भारत की सारे संसार में विशेष पहचान है, योग उनमें से एक है।

प्रश्न १ योग का क्या अर्थ है?

उत्तर योग का सामान्य अर्थ जोड़ना या मिलाना है। जैसे अंकों और संख्याओं का योग। वैसे ही आत्मा से परमात्मा को मिलाना योग है।

प्रश्न २ हमारे शास्त्रों में योग विषय पर क्या कहा गया है?

उत्तर शास्त्रों में योग के विषय में कुछ सूत्र इस प्रकार हैं –

(१) योगः चित्तवृत्ति निरोधः (२) योगः कर्मसु कौशलम्। आदि

प्रश्न ३ अष्टांग योग के प्रणेता कौन हैं?

उत्तर अष्टांग योग के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं।

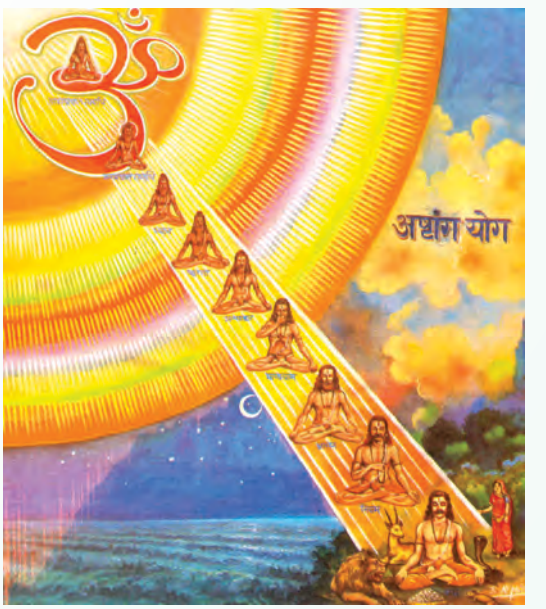

प्रश्न ४ योग के अंग क्या-क्या हैं?

उत्तर योग के आठ अंग हैं। इसीलिए इसे अष्टांग योग कहा जाता है। ये इस प्रकार हैं :-

(१) यम (२) नियम (३) आसन

(४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा

(७) ध्यान (८) समाधि

यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि। (पतंजलि योग सूत्र-२.२९)

प्रश्न ५ यम क्या है?

यम – **अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहाः यमाः॥**

(पतंजलि योग सूत्र २.३०)

अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय (किसी की वस्तु न लेना), ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह 'यम' कहलाते हैं।

प्रश्न ६ नियम क्या है?

नियम– **शौच संतोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः॥** पतंजलि योग सूत्र २.३२॥

अर्थात् – शौच (अन्दर–बाहर की शुद्धि), संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पाँच 'नियम' हैं।

वे ग्रन्थ, जिनमें ज्ञान–विज्ञान की श्रेष्ठ बातों का अथाह भण्डार है। आइए, उनका थोड़ा परिचय प्राप्त करें –

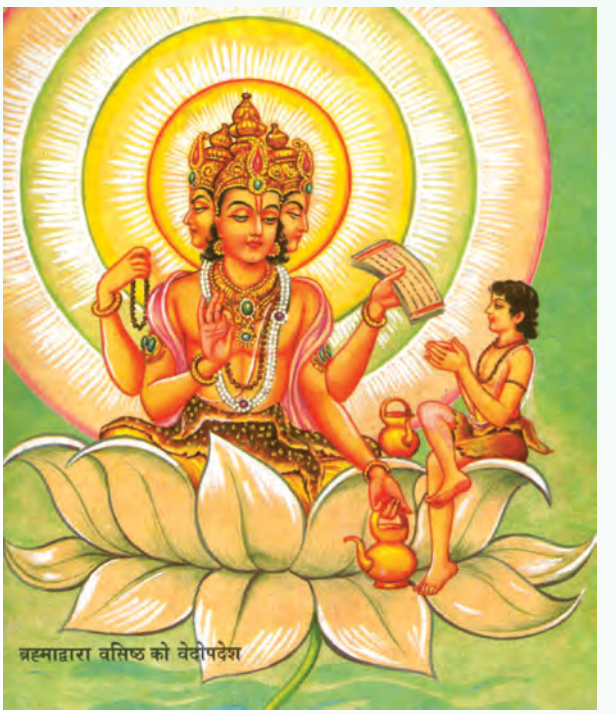
ब्रह्माद्वारा वसिष्ठ को वेदोपदेश

प्रश्न– वेद का अर्थ क्या है?

उत्तर वेद का अर्थ 'ज्ञान' है।

प्रश्न– वेद कितने हैं?

उत्तर वेद चार हैं।

प्रश्न– चारों वेदों के नाम बताइये।

उत्तर १. ऋग्वेद २. यजुर्वेद ३. सामवेद ४. अथर्ववेद

प्रश्न पुराण कितने हैं?

उत्तर पुराण १८ हैं।

प्रश्न वेदों के अतिरिक्त भारत के सबसे प्राचीन दो महाकाव्य कौन से हैं?

उत्तर १. रामायण २. महाभारत

प्रश्न वेदों की रचना किसने की?

उत्तर वेद भगवान ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुए। इनकी रचना करने वाला कोई मनुष्य नहीं है। इसलिए इन्हें 'अपौरुषेय' कहा जाता है।

प्रश्न सबसे पहले किस वेद की रचना हुई?

उत्तर ऋग्वेद – यह संसार का सबसे पुराना ग्रन्थ है।

प्रश्न पुराणों के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर सभी पुराणों के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं।

प्रश्न रामायण के रचयिता कौन हैं?

उत्तर महर्षि वाल्मीकि

प्रश्न वाल्मीकि रामायण में कितने श्लोक हैं?

उत्तर २४००० (चौबीस हजार)

६. हमारी वैज्ञानिक परम्परा

;xk&;xk l n'k gekjk mUur g foKkuh gA
vkfo"dkjk dh tuuh ;g ijEijk dY;k.kh gAA

हमारा भारत देश विश्व का सबसे उन्नत सभ्यता वाला प्राचीन देश है। हमारे देश में ऋषि-मुनि होते थे। वे लोक कल्याण को ध्यान में रखकर विज्ञान की खोज किया करते थे। जब हम रामायण, महाभारत आदि प्राचीन भारत के साहित्य को पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि भारत में विज्ञान ने कितनी उन्नति की थी। जैसे रामायण के अनुसार कुबेर का 'पुष्पक विमान' बिना ईंधन के चलता था। लक्ष्मण जी द्वारा खींची गई 'लक्ष्मण रेखा' वर्तमान में लेजर वाल (Laser Wall) से मिलती प्रतीत होती है जो दुश्मन से सुरक्षा के लिए बनाई जाती है।

अथर्वण ऋषि ने संसार में सर्वप्रथम अग्नि को प्रकट किया। वर्तमान समय में भी अग्नि का उपयोग करके भोजन आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं। वैदिक काल में भारतीय वैज्ञानिकों को वनस्पतिशास्त्र का विस्तृत ज्ञान था। उन्होंने वृक्ष, मूल, अंकुर, शाखा, पुष्प, फलों आदि वृक्ष के विभिन्न अंगों की जानकारी दी। महर्षि पराशर के वृक्ष आयुर्वेद नामक ग्रंथ में वृक्ष की आकृति, प्रकार आदि का वर्णन मिलता है। कौनसा वृक्ष किस उपयोग में आता है, किसमें कौनसे औषधीय गुण विद्यमान हैं, इसकी जानकारी उन्हें थी।

कुछ उदाहरण

१. भारत में इलेक्ट्रिक सेल का प्रथम आविष्कार अगस्त्य ऋषि ने किया था।
२. परमाणु की खोज करने वाले प्रथम वैज्ञानिक ऋषि कणाद थे।
३. वृक्षायुर्वेद नामक ग्रन्थ के लेखक पराशर ऋषि थे।
४. कुबेर के पास पुष्पक नामक विमान था। जिसे बाद में रावण ने छीन लिया था।
५. पृथ्वी गोल है यह बताने वाले आर्यभट्ट प्रथम ऋषि थे।

भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर जगदीशचन्द्र बसु

प्रोफेसर जगदीशचन्द्र बसु को अपने अनुसंधानों पर गहरा विश्वास था। उन्होंने यह सिद्ध करने के लिए कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है के अपने प्रयोग को सार्वजनिक करने का निर्णय लिया। बड़ी संख्या में वैज्ञानिक व सामान्यजन उनका प्रयोग देखने के लिए आए। उन्हें यह सिद्ध करना था कि पेड़-पौधों को भी पीड़ा होती है और विष देने से वे भी मर जाते हैं। बसु ने पौधे में विष का इंजेक्शन लगाया। अनुमान के अनुसार कुछ क्षणों में उस पौधे को मुरझा जाना था, पर पेड़ ज्यों का त्यों खड़ा रहा।

कुछ लोग हँसने भी लगे पर बसु विचलित नहीं हुए। उन्होंने तुरन्त कहा कि अगर यह विष पौधे को नुकसान नहीं पहुँचा सकता तो यह मुझे भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता है और अपने आप को उस विष का इंजेक्शन देने के लिए तैयार हो गए।

तभी एक व्यक्ति सामने आया और उसने अपनी छेड़छाड़ स्वीकार की। उसने विष की जगह उसी रंग का पानी शीशी में भर दिया था। जब बसु ने उस पौधे को असली विष का इंजेक्शन लगाया तो पौधा शीघ्र ही मुरझा गया। इस प्रयोग द्वारा उन्होंने सिद्ध किया कि वनस्पति में भी जीवन होता है।

कुछ महान वैज्ञानिक

अथर्वणऋषि – संसार के प्रथम वैज्ञानिक, जिन्होंने अग्नि को प्रकट किया। उनके शिष्यों/वंशजों ने अग्नि के अनेक प्रकारों का आविष्कार किया।

कपिल – सांख्य सूत्रों के रचयिता, सृष्टि विकास के प्रणेता।

टी.आर. शेषाद्रि – शैवाल रसायन के विशेषज्ञ।

वर्गीज कुरियन – श्वेत (दुग्ध) क्रान्ति के जनक।

एम.एस.स्वामीनाथन् – हरित क्रान्ति के जनक

भारतीय वैज्ञानिक

भारतीय वैज्ञानिकों के सम्बन्ध में कुछ जानकारियाँ –

१. रिक्त स्थानों को भरिए –

क. ----- ने न्यूटन से लगभग ५०० वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण की जानकारी दी। **(भास्कराचार्य)**

ख. 'पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है' का सिद्धान्त देने वाले विश्व के प्रथम वैज्ञानिक ------- थे। **(आर्यभट्ट)**

ग. 'वनस्पति में भी जीवन है' समस्त विश्व को यह जानकारी----ने दी। **(जगदीशचन्द्र बसु)**

घ. शून्य के उपयोग के नियम बनाने वाले वैज्ञानिक ---------- थे। **(ब्रह्मगुप्त)**

ङ. विश्व में बीसवीं शताब्दी के महान भारतीय गणितज्ञ ------ थे। **(श्रीनिवास रामानुजन)**

च. परमाणु की खोज करने वाले प्रथम वैज्ञानिक ------- थे। **(कणाद)**

प्रश्नोत्तर

प्रश्न १. थुम्बा कहाँ है? यह क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर– केरल प्रान्त, रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र।

प्रश्न २. श्रीनिवास रामानुजन का नाम किस लिये प्रसिद्ध है?

उत्तर– गणितज्ञ के नाते।

प्रश्न ३. डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमन (सी.वी.रमन) को सन् १९३० में किस कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ?

उत्तर– भौतिक विज्ञान में 'रमन प्रभाव' की खोज के कारण।

प्रश्न ४. वैकल्पिक ऊर्जा का स्रोत क्या है?

उत्तर– सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा।

प्रश्न ५. वृक्ष की आयु कैसे ज्ञात की जाती है?

उत्तर– वृक्ष की आयु बढ़ने से उसकी शाखायें व तना मोटे होते जाते हैं। प्रतिवर्ष केम्बियम (तने) में कोशिकाओं की एक पर्त की वृद्धि हो जाती है। प्रत्येक पर्त एक वृत्त बनाती है। इन वृत्तों को गिनकर वृक्ष की आयु का पता लगाया जाता है। जिस वर्ष वर्षा अच्छी होती है, ये वृत्त अधिक मोटे होते हैं।

वैज्ञानिक प्रेरक प्रसंग

भारत के वैज्ञानिक पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपनी पुस्तक विज़न २०२० में अपने अनुभव के विषय में लिखते हैं कि मेरे कमरे में दीवार पर एक बहुरंगी कैलेण्डर टँगा है। यह सुन्दर कैलेण्डर जर्मनी में छपा है तथा इसमें आकाश में स्थित उपग्रहों द्वारा यूरोप और अफ्रीका के खींचे गये चित्र अंकित हैं। कोई भी व्यक्ति इन चित्रों को देखता है तो प्रभावित होता है; परन्तु जब उसे बताया जाता है कि जो चित्र इसमें छपे हैं, वे भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह ने खींचे हैं तो उसके चेहरे पर अविश्वास के भाव उभरते हैं और वे तब तक शान्त नहीं होते जब तक उस कैलेण्डर में नीचे उस कम्पनी द्वारा भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह द्वारा खींचे गये चित्रों की प्राप्ति का कृतज्ञता ज्ञापन वे नहीं पढ़ लेते।

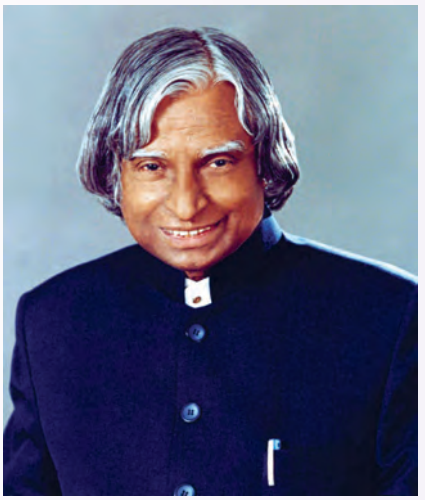

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हमें अपने विज्ञान और वैज्ञानिकों पर गर्व करना चाहिए।

पवित्र एवं औषधीय वृक्ष

नीम– नीम का वृक्ष कई प्रकार से हमारे काम आता है। इसके फूल-फल, पत्ती, लकड़ी, छाल आदि में अनेक प्रकार के औषधीय गुण हैं। इसकी पत्तियों का उपयोग खेत में कीटनाशक के रूप में किया जाता है। नीम के तेल से दीपक जलाने पर मच्छर आदि भाग जाते हैं। नीम का तेल चर्म रोग के उपचार में भी लाभदायक होता है। भारतीय परिवारों में नीम के वृक्ष की भी पूजा की जाती है और शुभ कार्यों में नीम की पत्तियों का उपयोग किया जाता है। नीम के वृक्ष की छाया शीतलता प्रदान करती है।

आम– आम के वृक्ष का भी उपयोग भारतीय परिवारों में बहुधा होता है। आम के पत्तों का उपयोग शुभ कार्यों में वन्दनवार के लिए किया जाता है। इसका फल बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है।

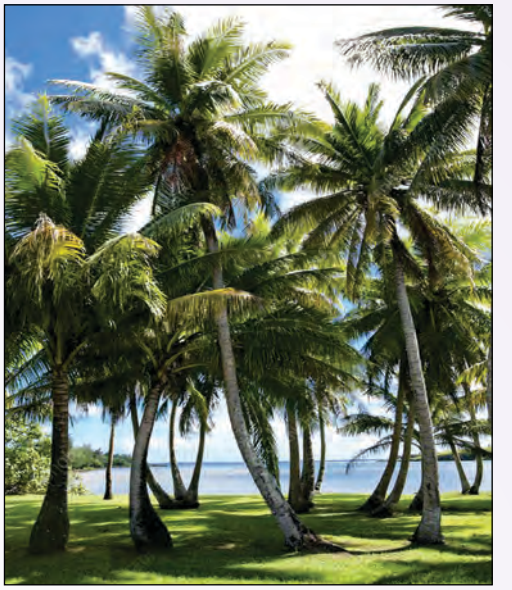

नारियल के वृक्ष

नारियल– नारियल वृक्ष के फल का हम तीन प्रकार से प्रयोग करते हैं। हरे नारियल का पानी पीते हैं। नारियल पानी पेट के लिए बहुत लाभदायक होता है। इसमें अधिक मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इसके बाद जटा वाले नारियल देव पूजा में, कलश पूजा में और मन्दिरों में चढ़ाने के काम आता है। नारियल जब सूख जाता है तो उसमें से उसकी गिरी का गोला निकलता है। इसका तेल बनता है यह तेल हमारे दैनिक जीवन के उपयोग में आता है। नारियल का तेल लगाने से सिर के बालों को पोषण मिलता है और उनकी वृद्धि होती है।

भारतीय कालगणना

वराहमिहिर

समय को काल भी कहा जाता है। इसलिए समय की गिनती को हम कालगणना कहते हैं। कालगणना की भारतीय पद्धति बहुत प्राचीन है। बहुत लम्बे समय तक यह प्रचलन में थी। किंतु आज इसका प्रयोग केवल पंचांग में किया जाता है। यह जानकारी कितनी अद्‌भुत है, कितनी आश्चर्यचकित कर देने वाली है, कितनी सूक्ष्म है और कितनी निश्चित है। आओ, हम इस अद्‌भुत कालगणना को जानें –

समय का नाप –

१. समय का सबसे छोटा नाप है परमाणु,

२. परमाणु = १ अणु,

३ परमाणु = १ त्रसरेणु, ३ त्रसरेणु = १ त्रुटि।

क्या आप जानते हैं कि त्रुटि किसे कहते हैं?

कमल की पंखुड़ी को सुई से छेद करने में जितना समय लगता है उतने समय को त्रुटि कहते हैं तथा तीन त्रसरेणु को पार करने में सूर्य की किरण को जितना समय लगता है उतने समय को त्रुटि कहते हैं।

२. १०० त्रुटि = १ वेध, ३ वेध = १ लव, ३ लव = १ निमेष, ३ निमेष = १ क्षण।

अरे! यह निमेष शब्द तो पहली बार सुना है।

पलक झपकने को निमेष और उन्मेष कहते हैं। आँख बन्द करके खोलने को पलक झपकना कहते हैं। निमेष का अर्थ है आँख बन्द होना और उन्मेष का अर्थ है आँख खुलना।

पलक झपकने की क्रिया में आँख बन्द होने को जितना समय लगता है उतने समय को निमेष कहते हैं। तीन निमेष का एक क्षण होता है। 'क्षण' शब्द से तो हम परिचित हैं।

३. ५ क्षण = १ काष्ठा, १५ काष्ठा = १ लघु, १५ लघु = १ घटी।

४. **यह घटी क्या है?**

१ सेर (५०० मि.ली.) पानी जिसमें भर सके इतना बड़ा छह पल तांबे का पात्र लें। बीस गुंजा भार की चार अंगुल लम्बी सोने की सींक से उस पात्र में छेद करें। एक बड़े पात्र में पानी भर कर उसमें यह छेदवाला पात्र रखें। जितने समय में यह पात्र पानी से भरकर डूब जायेगा उतने समय को १ घटी या घटिका कहते हैं। १ घटी = २४ मिनट होते हैं।

घटी से आगे की इकाइयाँ हम पंचमी कक्षा में पढ़ेंगे।

संगीत की भारतीय परम्परा

भारतीय संगीत परम्परा बहुत प्राचीन है। भारत में संगीत विषयक जितना ज्ञान-विज्ञान विकसित हुआ संसार में ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है। संगीत के सात शुद्ध स्वर (विकृत स्वर मिलाकर बारह) होते हैं। इसलिए इनके समूह को सप्तक कहते हैं।

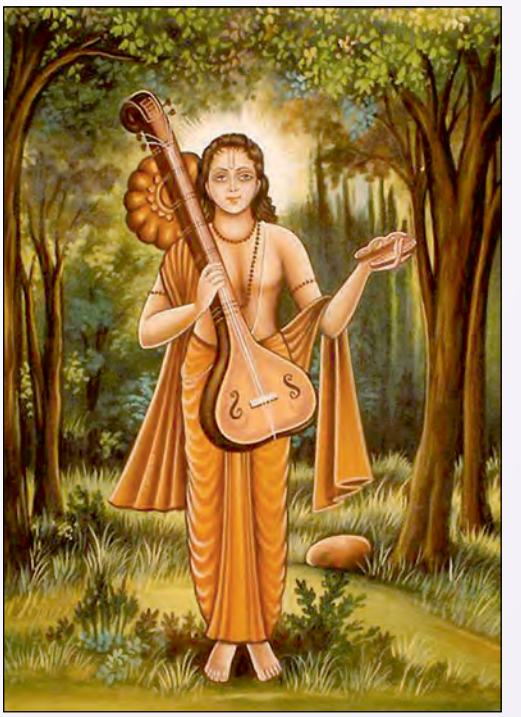

महर्षि नारद

सप्तक तीन होते हैं (१) मन्द्र सप्तक यानि सामान्य से धीमे/मंदा (२) मध्यम सप्तक यानि सामान्य और (३) तार सप्तक यानि सामान्य से तेज / ऊँचा स्वर। इसके अतिरिक्त कभी-कभी अतितार सप्तक का भी प्रयोग मिलता है। मंद्र सप्तक के स्वर नीचे बिन्दु (सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़) और तार सप्तक के स्वर ऊपर बिन्दु लगाकर (सां रें गं मं पं धं निं) दर्शाए जाते हैं। यह संगीत के लिपि चिह्न हैं। इन्हें उर्दू भाषा के नुक्ते या संस्कृत भाषा के अनुस्वार जैसा, उच्चारण नहीं करते, केवल दर्शाया जाता है।

आरोह-अवरोह -

स्वरों का क्रमशः चढ़ाव / बढ़ता क्रम आरोह (सा रे ग म प ध नि सा) व उतार /घटता क्रम (सां नि ध प म ग रे सा) अवरोह कहलाता है।

ठाट एवं राग -

आधुनिक भारत में मुख्य रूप से दो संगीत पद्धति प्रचलित हैं – भारत के उत्तरी और मध्य क्षेत्र में 'हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति' को पण्डित विष्णु दिगम्बर भातखण्डे ने व्यवस्थित कर लिपिबद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। भारत के दक्षिणी प्रान्तों में 'कर्नाटक संगीत पद्धति' प्रचलित है। स्वर, श्रुतियों पर आधारित होते हैं जो बहुत सूक्ष्म अन्तरवाली सुनिश्चित संगीत उपयोगी ध्वनियाँ हैं। षडज, पंचम् और मध्यम की चार-चार, गन्धार और निषाद की दो-दो तथा ऋषभ व धैवत की तीन-तीन, इस प्रकार बाइस श्रुतियाँ हैं। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में ये स्वर पहली किन्तु कर्नाटक संगीत पद्धति में अन्तिम श्रुतियों पर स्थित माने गए हैं।

बारह स्वरों को प्रमुख रूप से विशेष प्रकार से निश्चित किया गया है जिनके आधार पर अलग-अलग रागों की रचना होती है। ये ठाट कहलाते हैं। पण्डित भातखण्डे जी ने हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में (१) कल्याण (२) बिलावल (३) खमाज (४) काफी (५) पूर्वी (६) मारवा (७) भैरव (८) भैरवी (९) आसावरी और (१०) तोड़ी, ठाट माने हैं जबकि कर्नाटक संगीत में ठाटों की संख्या ७२ तक मानी गई है।

भारतीय संगीतकार
पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

भारतीय संगीतकार
विष्णु नारायण भातखण्डे

लोकनृत्य

भारत के जीवन्त लोकनृत्य देश की विविध संस्कृति और रीति-रिवाजों को, हमारी परम्परा, प्रकृति एवं इतिहास को व्यक्त करते हैं। आकर्षक वेशभूषा स्थानीय परम्परा के अनुसार बदलती रहती है लेकिन नृत्यों के प्रकार, प्रणाली पारम्परिक होते हैं। अधिकांश लोकनृत्य पुरुष और महिलाएँ एकसाथ करते हैं। इन नृत्यों का प्रचलन अब शहरों में भी बढ़ता जा रहा है।

विभिन्न प्रान्तों के लोकनृत्य यहाँ बताए जा रहे हैं -

हरियाणा	झूमर, फाग, धमाल
पंजाब	भाँगड़ा, गिद्दा, धमन
उत्तर प्रदेश	नौटंकी, रासलीला, राई
हिमाचल प्रदेश	किन्नौरी, चम्बा, झाली
उत्तराखण्ड	गढ़वाली, कुमायूनी, चैपली
राजस्थान	कठपुतली, घूमर, कालबेलिया
त्रिपुरा	होजागिरी
ओडिशा	छऊ, घुमारा, रणप्पा
आन्ध्र प्रदेश	घण्टा मर्दला, कोलाट्टम, कुम्मी

भाँगड़ा

संथाली

मध्य प्रदेश	मटकी, तरतली, जवारा
छत्तीसगढ़	झूमर, गौर मारिया, वेदमती
झारखण्ड	करमा मुण्डा, संन्थाली, घोरानाच
पश्चिम बंगाल	बाउल, छाऊ, गम्भीरा
सिक्किम	ताशी, यांगकू, चू फाट
मेघालय	लाहो, बाला, नोंगक्रेम
असम	बिहू, बिछुआ, नागा
अरुणाचल प्रदेश	मुखौटा, पौंग, छम

गरबा

कर्नाटक	यक्षगान, सुग्गी, करगा
गोवा	फुगड़ी, डाकनी, शिगमो
तेलंगाना	कीसाबादी, पेरिणी, शिवताण्डवम्
केरल	कालीअट्टम्, ओट्टम थुलाल
तमिलनाडु	करगाम, कवाड़ी, कोलाट्टम
महाराष्ट्र	लावणी, लेजिम, नकटा
गुजरात	गरबा, डाण्डिया, भवई

लावणी

७. हमारा गौरवशाली अतीत

_f"kefu jk tk çtk lHkh uft l ij thou okjkA
çk.kk l Hkh fç; ge g Hkkjr n'k gekjkAA

हमारे दिग्विजयी वीर

कौण्डिन्य

इतिहास में कौण्डिन्य नाम के दो महापुरुषों का उल्लेख प्राप्त होता है। दोनों ही कौण्डिन्य दक्षिण के ब्राह्मण थे और युद्ध-शास्त्र में निपुण थे। दक्षिण भारत से गए कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण ने हिन्द-चीन में एक हिन्दू राज्य की स्थापना की। चीनी भाषा के साहित्य में इस राज्य का नाम 'फूनान' मिलता है। ईसवी सन् ७४ में फूनान एक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया। इससे पहले यह राज्य नागपूजकों द्वारा पूजित राज्य था जिन्हें कौण्डिन्य ने परास्त कर 'सोमा' नामक नाग कन्या से विवाह कर नवीन वंश को प्रारम्भ किया। 'सोमा' के कारण ही इस वंश का नाम 'सोमवंश' पड़ा। फूनान की राजधाानी 'मेकाड' नदी के तट पर थी। यहाँ के शिव मंदिरों में नटराज स्वरूप का बाहुल्य है।

समुद्रगुप्त

गुप्त वंश के शासक चन्द्रगुप्त ने ३२० ईसा पूर्व में समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। यद्यपि वह चन्द्रगुप्त का सबसे बड़ा पुत्र नहीं था किन्तु समुद्रगुप्त की योग्यता के कारण उन्हें राजा बनाया गया। पड़ोसी राजाओं ने उनके उत्तराधिकार को स्वीकार नहीं किया। अनेक राजाओं ने मिलकर उन पर आक्रमण कर दिया। समुद्रगुप्त को इसमें विजय प्राप्त हुई। इस समय भारत की राजनैतिक स्थिति डाँवाडोल थी। पश्चिमी पंजाब तथा सीमान्त प्रदेशों पर कुषाणों की सत्ता अभी भी थी। देश में फैले हुए छोटे-छोटे राजाओं को युद्ध में हराकर उदारतापूर्वक उनका राज्य उन्हें वापस लौटा दिया अत: इन राजाओं ने समुद्रगुप्त को कर देना स्वीकार कर लिया। समुद्रगुप्त के शासन की उत्तरी सीमा का विस्तार हिमालय के समानान्तर पंजाब, लाहौर, यमुना संगम से नरवर व जबलपुर तक था। पश्चिम के नौ तथा दक्षिण के बारह गणराज्य सम्राट की ही आज्ञा से शासन चलाते थे। मालवा, काठियावाड़ तथा उत्तर-पश्चिम के शासक समुद्रगुप्त से आदेश प्राप्त करते थे। सिंघलद्वीप के राजा मेघवर्ण ने समुद्रगुप्त की

वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त

अनुमति प्राप्त कर बौद्ध-भिक्षुओं के लिए मठ बनवाए थे। मलाया प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों ने भी समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली थी। समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ कर विशेष प्रकार के सिक्के चलाए। इन सिक्कों पर एक ओर यज्ञ-यूप से बँधा हुआ घोड़ा और दूसरी ओर चँवर लिए पटरानी की मूर्ति अंकित थी। वह वीणा बजाने में कुशल था। वह दानी व दयालु भी था और विद्या का संरक्षक था। समुद्रगुप्त की मुद्रा पर गरुड़ की मूर्ति अंकित रहती थी। इससे स्पष्ट है कि वह विष्णु पूजक था। उसका काल भारत का स्वर्णयुग कहलाता है।

हमारा राष्ट्रगीत - वन्देमातरम्

बंकिम बाबू ने इसके बारे में अपनी पुत्री से कहा था – ''एक दिन ऐसा आयेगा कि बंगभूमि इस गीत को सुनकर नाचने लगेगी। केवल बंगाल ही नहीं, सारा भारत इस गीत से प्रेरणा ग्रहण करेगा।''

'वन्देमातरम्' हमारे देश का राष्ट्रगीत है। यह स्वतंत्रता के लिये अमर उद्घोष के रूप में गाया जाने वाला गीत है। इसके रचयिता 'बंकिम चन्द्र चटर्जी' हैं जिन्होंने इसे अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्द मठ' में लिखा था। वन्देमातरम् को अपार जन श्रद्धा प्राप्त है। यह अंग्रेजों को अत्यधिक आतंकित करता था और देशभक्तों को अपना सब कुछ बलिदान करने के लिये आन्तरिक बल प्रदान करता था। स्वतंत्रता आन्दोलन में अनेक वीरों ने वन्देमातरम् का नारा लगाकर कठोर यातनायें सहीं तथा अपने प्राण देकर शहीद हो गये। सन् १९३९ के १ जुलाई के 'हरिजन' पत्रिका के अंक में महात्मा गाँधी जी ने लिखा था 'मैंने जब वन्देमातरम् को गाये जाते हुए सुना तो मैं भावविभोर हो गया और मुझ पर जादू-सा असर हुआ। ....हमारा झण्डा और यह गीत तब तक रहेंगे जब तक राष्ट्र है।'' वन्देमातरम् गान में "त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीं, कमला, कमलदलविहारिणी, वाणीविद्यादायिनी" का समावेश है, इसका अर्थ है ''हे भारत माँ! तुम ही दशभुजा देवी दुर्गा हो, तुम ही कमल पर विराजमान लक्ष्मी कमला हो और तुम ही विद्यादायिनी सरस्वती हो।'' वन्देमातरम् अत्यन्त सुन्दर, स्वदेश प्रेमपरक गीत है जिसने बंग-भंग आंदोलन को अपनी प्रेरणा एवं अन्तर्निहित शक्ति द्वारा सफल बनाया था।

राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम्।
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्देमातरम्।।

प्रेरक बालवीर

घुट्टी में जो राष्ट्रभक्ति का पान किया करते हैं।
स्वतन्त्रता अनमोल समझ बलिदान दिया करते हैं॥

नन्हा क्रान्तिकारी-दत्तू रंगारी

१५ अगस्त और २६ जनवरी पर तिरंगा तो हम सभी फहराते हैं। झण्डा फहराने के बाद बच्चों को मिठाई खाने को मिलती है। आप जैसे कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिन्हें तिरंगा फहराकर मिठाई नहीं मिली, गोली खानी पड़ी। १८५७ की क्रान्ति के पश्चात तो देश का बच्चा-बच्चा आजादी के लिए मचल उठा था। ऐसे वातावरण में १६ अगस्त १९२४ को मैसूर (कर्नाटक) के बेलगाँव जिले के बेल हुंगल ग्राम में एक बालक का जन्म हुआ। उसके पिता लक्ष्मण रंगारी ने उसका नामकरण दत्तू रंगारी ने किया। बचपन में पिता उसको "वन्देमातरम्" एवं लोग उसे नन्हा क्रान्तिकारी ही बुलाते।

अवस्था के साथ-साथ दत्तू घर और पाठशाला में देशभक्ति का पाठ पढ़ता गया। वह स्वतंत्रता के बलिदानी वीरों की गाथाएँ सुनता था। राष्ट्रभक्ति के गीत दुहराता था। वह अंग्रेजी अत्याचारों से भारतमाता की मुक्ति के स्वप्न देखा करता था। दत्तू को देशसेवा की ऐसी लगन लगी कि वह बचपन में ही क्रान्तिकारियों के गुप्त सन्देश यथास्थान पहुँचाने लगा। वह बड़ा निडर था। अंग्रेजों के प्रति उसके मन में भरपूर घृणा थी। वह उनके विरुद्ध कुछ भी करने को आतुर रहता था। बच्चा होने से वह अंग्रेजी शासन तन्त्र की दृष्टि से भी बचा रहता था। दत्तू बहुत चतुर व चपल था। अंग्रेजी सिपाहियों को छकाना उसका मनपसंद खेल बन चुका था।

१३ वर्ष का होते-होते उसे लुकछुप कर नहीं, खुलेआम भी अंग्रेजी प्रशासन को चुनौती देने का सुअवसर मिल गया। २३ अगस्त १९४२ को बेल हुंगल में भारत छोड़ो आन्दोलन के निमित्त जुलूस निकल रहा था। दत्तू ने जुलूस में जाने की योजना बनाई। वह हाथ में तिरंगा थामे बालक टोली के साथ जुलूस में आगे-आगे चल रहा था। उसने वन्देमातरम् का ओजस्वी घोष लगाकर अंग्रेज अधिकारियों के हृदय को कँपा दिया।

पुलिस अधिकारियों ने उसे रुकने के लिए कहा किन्तु उसके कदम आगे बढ़ने से नहीं रुके। वह चिल्लाया, 'देश की राह पर बढ़े कदम पीछे नहीं हटेंगे। वन्देमातरम्'।

पुलिस ने गोलियों की बौछार शुरू कर दी। उसकी छाती में गोली लगी किन्तु उसने हाथों का तिरंगा न झुकने दिया। उसने तिरंगा अपने साथी को थमा दिया। पवन देवता ने उसकी देह को भारत माता की रज से ढक दिया। दत्तू के मुख पर असीम सन्तोष था।

बिशनसिंह कूका

पंजाब के वीर कूकाओं द्वारा गौरक्षा आन्दोलन के समय कसाइयों से गायों को छुड़ाने के कारण शहीद हुये ६५ कूकाओं में एक १३ वर्ष का बालक था, जिसने अंग्रेज अधिकारी कावन द्वारा गुरु के प्रति अपशब्द कहने पर उस अंग्रेज की दाढ़ी नोच डाली। परिणामस्वरूप उसके दोनों हाथ कटवा दिए गए और मातृभूमि की बलि-वेदी पर एक और बालक शहीद हो गया।

वीर बालक बिशनसिंह कूका

धीरज कुमार

बिहार राज्य के बेतिया के योगापट्टी प्रखण्ड की चौमुखा पंचायत का रहने वाला १४ वर्षीय किशोर धीरज पिछले वर्ष अधिक चर्चा में रहा। गण्डक नदी में धीरज का ग्यारह वर्षीय भाई नीरज कुमार अपनी भैंस को नहला रहा था। नीरज कुमार भैंस को नहलाने तथा गीत गाने में मस्त था कि उसी समय मगरमच्छ ने चुपके से नीरज पर हमला कर दिया। अपने छोटे भाई को मगरमच्छ के शिकंजे में फँसा देख धीरज कुमार परेशान हो गया। नीरज लगातार करुण क्रन्दन करते हुए सहयोग की पुकार कर रहा था। जब धीरज से अपने भाई की यह दशा नहीं देखी गयी तब उसे लगा कि मगरमच्छ भाई की जान ले लेगा और उसने पानी में छलाँग लगा दी।

करीब दस मिनट तक धीरज कुमार मगरमच्छ से भिड़ा। ऐसा लग रहा था कि अब दोनों भाई की जान जाने वाली है। किन्तु धीरज ने अपना साहस नहीं छोड़ा तथा अत्यधिक बहादुरी से मगरमच्छ को परास्त कर अपने छोटे भाई नीरज को मृत्यु के मुख से बाहर निकाल लिया। मगरमच्छ को परास्त करने के बाद धीरज अपने छोटे भाई को बाहर ले आया। दोनों भाइयों का उपचार स्थानीय अस्पताल में हुआ।

धीरज कुमार की निर्भयता, साहस तथा बहादुरी के लिए उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रदान किया गया। मोदी जी ने जब धीरज से यह पूछा कि तुम्हें मगरमच्छ से डर नहीं लगा तब धीरज ने उत्तर दिया, ''उस समय केवल मेरा छोटा भाई नीरज सामने दिख रहा था।'' ''तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो?'' मैं फौजी बनकर देश की सेवा करना चाहता हूँ।''

ge viuh lLÑfr tkux] tu&tu rd igpk;xA
ekrHkfe l fo'o xxu rd] xkjoxku xtk;xAA

❑❑❑

निवेदन

प्रिय भैया-बहिनों से ...

यह पुस्तक तो आपने पूरी पढ़ ली। पुस्तक केवल पढ़ने और संभाल कर रख लेने के लिए तो नहीं होती आगे विचार करने के लिए यदि हमने उसमें से कुछ नहीं निकाला तो पुस्तक की उपयोगिता क्या हुई? इसलिए, कुछ बातें आपके सोचने एवं करने के लिए ...

यह तो छोटी-सी पुस्तक है। कितना भी बड़ा ग्रन्थ क्यों न हो, उसमें भी विषयवस्तु की सीमा तो रहती ही है। उस पर संस्कृति जैसा व्यापक विषय कुछ पृष्ठों की मर्यादा में कैसे समा सकता है? इसलिए सबसे पहले तो अपने ध्यान में यह आना चाहिए कि यह पुस्तक संस्कृति के कुछ प्रमुख अंगों का परिचय मात्र है, सम्पूर्ण संस्कृति बोध नहीं। कुछ जानकारियाँ एवं तथ्य आपके ध्यान में आ गए, अब उनके विस्तार में जाने का काम तो आपको ही करना है – स्वाध्याय द्वारा, चर्चा द्वारा, चिंतन द्वारा।

दो शब्द प्रयोग में आते हैं – सभ्यता और संस्कृति। प्राय: दोनों को पर्यायवाची समझा जाता है, जबकि दोनों में अनेक अन्तर हैं। सभ्यताएँ बदलती हैं, बनती-बिगड़ती हैं। संस्कृति का आधार स्थायी तथा शाश्वत होता है। सड़क बनाने की एक प्रक्रिया होती है – नाप-जोख की जाती है, निर्माण सामग्री आती है, सरकार या नगर पालिका धन देती है और अभियन्ताओं के मार्गदर्शन-निरीक्षण में श्रमिक सड़क बनाते हैं। इसके विपरीत गाँव में खेतों के बीच से होकर मन्दिर या तालाब तक जाने वाली पगडण्डी कोई बनाता नहीं, चलने वालों के पैरों से स्वयं बन जाती है। सभ्यता सड़क है, संस्कृति पगडण्डी जोकि उसका पालन करने वालों ने स्वयं बना ली है। इसमें सभ्यता का भी अंश होता है, किन्तु पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज-परम्पराओं, मान बिन्दुओं-श्रद्धा केन्द्रों के प्रति समान आस्था समाज को एकजुट करती है। गंगा उत्तर भारत में बहती है किन्तु सुदूर दक्षिण भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी जा बसे भारतीय मूल के समाज के लिए श्रद्धा का केन्द्र है। संस्कृति का आधार भावात्मक एकात्मता है जो हमें एक-दूसरे से जोड़कर रखती है। कविवर सुमित्रानन्दन पंत अपनी कविता 'आस्था' में लिखते हैं – "प्रखर बुद्धि से भले सभ्यता हो नव निर्मित, संस्कृति के निर्माण के लिए हृदय चाहिए।"

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो॰ किशोरीदास वाजपेयी कहते हैं, "संस्कृति संस्कार से बनती है जबकि सभ्यता नागरिकता का रूप है।"

अत: अपने लिए विचार करने का दूसरा विषय है, क्या हम सभ्यता और संस्कृति को अलग-अलग ठीक प्रकार से समझते हैं।

आजकल मंच पर होने वाली प्रस्तुतियों – नृत्य, नाट्य, गायन-वादन, अभिनय को 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' कहा जाता है। यदि उनमें अपने देश की संस्कृति की झलक नहीं है तो वे रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ मात्र हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रम तो नहीं।

वीर सावरकर लिखते हैं, ''विश्व रचना परमात्मा द्वारा सम्पन्न हुई है। संस्कृति मानव प्रकृति द्वारा की गई उसकी अनुकृति मात्र है। संस्कृति का सर्वोत्तम रूप प्रकृति और मानव पर मानव की आत्मा की पूर्ण-विजय प्राप्ति ही है।'' अर्थात् अपनी संस्कृति की मूलभूत विशेषताओं को समझकर और उन्हें जीवन व्यवहार में लाकर हम एक प्रकार से परमात्मा के कार्य का अनुकरण ही कर रहे होते हैं।

देशभर के अनेक विद्वानों ने इस पुस्तक में अत्यन्त परिश्रमपूर्वक जो जानकारी संकलित कर हमारे हाथों में सौंपी है, वह केवल रट लेने और परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए नहीं है। हम इस सूत्र रूप में प्राप्त जानकारियों के आधार पर इस दिशा में और अधिक खोजें-जानें-समझें-समझायें, तभी इस श्रम की सफलता होगी। ज्ञानदायिनी माता सरस्वती हमें ऐसी सामर्थ्य प्रदान करें, यही प्रार्थना।

– महामंत्री

प्रकाशक :

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान

संस्कृति भवन, सलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : ०१७४४-२५१९०३, २७०५१५ मोबाइल/व्हाट्सएप्प : ९८१२५२०३०१

sgp@samskritisansthan.org www.samskritisansthan.com vidyabhartikurukshetra vidyabhartisss YouTube vbsss kkr

प्रकाशन वर्ष : विक्रम संवत् २०८१, युगाब्द ५१२६ (सन् 2024 ई॰)